किसी भी आपात स्थिति में
तत्काल सहायता हेतु
112 नंबर
मिलाएं

गिरिराज

हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2018-2020
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/बागबानी...5, संस्कृति...6-7, कहानी...8, महिला/बाल/विज्ञान जगत...9, पहाड़ी...10

वर्ष 42 अंक 10 शिमला, 4 दिसम्बर, 2019 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये website:himachalpr.gov.inègiriraj.asp

मिल्कफेड ने बाजार में उतारा फोर्टिफाइड 'हिम गौरी' दूध

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला में टाटा ट्रस्ट और नेशनल डेयरी डिवेलप्मन्ट बोर्ड की सहायता से हिमाचल प्रदेश दूध प्रसंघ के विटामिन 'ए' और 'डी' से युक्त फोर्टिफाइड दूध 'हिम गौरी' को बिक्री के लिए जारी किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि लोगों को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए फोर्टिफाइड दूध का इस्तेमाल विश्व भर में किया जाता है। सामान्य दूध की तुलना में इस दूध के अनेक लाभ हैं। यह गाय का ऐसा दूध है जिसमें अतिरिक्त विटामिन और खनिज होते हैं और यह स्वास्थ्य के लिए बहुत गुणकारी है। यद्यपि आज बाजार में उपलब्ध ज्यादातर खाद्य पदार्थों की पैकिंग पर पोषक तत्वों की जानकारी प्रदान की जाती है, लेकिन इसके बावजूद इस दिशा में अभी काफी कुछ किया जाना बाकी है। उन्होंने कहा कि दूध का इस्तेमाल मुख्यतः बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए किया जाता है, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इसमें सभी जरूरी सामग्री हो। उन्होंने कहा कि यह प्रशंसनीय (शेष पृष्ठ 11 पर)

उपभोक्ताओं को फोर्टिफाइड गेहूं का आटा उपलब्ध करवाने वाला पहला राज्य है हिमाचल

केन्द्र से 112 ग्रामीण सड़क परियोजनाएं मंजूर

केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने हिमाचल प्रदेश की 1250 किलोमीटर लम्बाई की 112 ग्रामीण सड़कों और एक पुल को स्तरोन्नत व सुधार करने के प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान की है। इन परियोजनाओं के लिए 964.25 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं।

इनमें 109 सड़कों को हरित और पर्यावरण अनुकूल तकनीक के अन्तर्गत तैयार किया जाएगा। 17 सड़कों को मध्यवर्ती लेन मानकों, छः सड़कों को सिंगल लेन मानकों के आधार पर स्तरोन्नत किया जाएगा जबकि 89 सड़कों का सिंगल लेन मानकों के आधार पर सुधार होगा।

इन परियोजनाओं में बिलासपुर, कुल्लू और चम्बा जिला की छह-छह, सोलन, ऊना और हमीरपुर की नौ-नौ, कांगड़ा की 24, किन्नौर की तीन, लाहौल-स्पीति की दो, मण्डी की 20, शिमला की 11 और सिरमौर जिले की सात सड़कों को स्तरोन्नत करने का प्रस्ताव है।

नई दिल्ली में ग्रामीण विकास सचिव की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में इन सड़क परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई।

देश में शीघ्र लागू होगी नई शिक्षा नीति-रमेश पोखरियाल

शिक्षा का हब बनेगा हिमाचल-मुख्यमंत्री

केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री रमेश पोखरियाल शिमला में आयोजित हि.प्र. विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मेधावी विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान करते हुए। साथ हैं हि.प्र. के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय व मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय का 25वां दीक्षांत समारोह शिमला में मनाया गया, जिसमें केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस दौरान मेधावी विद्यार्थियों को 448 डिग्रियां और गोल्ड मेडल प्रदान किए गए, जिनमें 276 छात्राएं और 172 छात्र शामिल हैं। विवेक कुमार को डी.लिट की डिग्री जबकि अफगान के मोहम्मद शरीफ शाहीन को लोक प्रशासन में गोल्ड मेडल प्रदान किया गया। इन सभी विद्यार्थियों को केन्द्रीय मंत्री ने स्वर्ण पदक और डिग्रियां प्रदान की।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के 25वें दीक्षांत समारोह में मेधावी विद्यार्थियों को 448 डिग्रियां व गोल्ड मेडल प्रदान

केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि ज्ञान और (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने और शिक्षा के लिए अधोसंरचना सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार हिमाचल प्रदेश को देश का शिक्षा केन्द्र बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। इंडिया टुडे पत्रिका ने अपने सर्वेक्षण में राज्य को हाल ही में बड़े राज्यों की श्रेणी में शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र में पहला स्थान प्रदान किया है। यह पुरस्कार मिलने से सरकार शिक्षा क्षेत्र में और अधिक समर्पण व प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों के लिए एक अविस्मरणीय पल होता है क्योंकि इस दिन उन्हें अपने कठिन परिश्रम के लिए पुरस्कार प्राप्त होता है। उन्होंने (शेष पृष्ठ 11 पर)

उद्योगों को भूमि उपलब्धता के लिए उपायुक्तों की अध्यक्षता में गठित होगी समिति

राज्य सरकार प्रदेश में औद्योगिक एवं अन्य इकाइयों को स्थापित करने के उद्देश्य से सरकारी व निजी भूमि चिन्हित करने के लिए संबंधित उपायुक्तों की अध्यक्षता में कमेटी गठित करेगी। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला में हिम प्रगति पोर्टल की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह बात कही।

हिम प्रगति पोर्टल पर निवेशकों के 200 मामलों में से 154 का किया समाधान

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन परियोजनाओं पर समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हो चुके हैं, उन्हें शीघ्र स्वीकृतियां प्रदान करना सुनिश्चित बनाएं। उद्योग, ऊर्जा, पर्यटन जैसे प्रमुख विभागों के लिए जो लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, उन्हें तय समय सीमा में पूरा किया जाए। उन्होंने विशेषकर वन स्वीकृतियों के समयबद्ध निपटारे पर बल देते हुए कहा कि यह सुनिश्चित बनाया जाए कि निवेशकों को स्वीकृतियां प्राप्त करने में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

उन्होंने कहा कि हिम प्रगति पोर्टल की सुविधा आरम्भ होने से पहले निवेशकों को अपनी परियोजनाओं को स्वीकृत करवाने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। विभिन्न क्षेत्रों में निवेश से प्रदेश के विकास में सहयोग मिलता है इसलिए यह आवश्यक है (शेष पृष्ठ 11 पर)

ज्ञान प्राप्ति के साथ चरित्र निर्माण भी होना चाहिए शिक्षा का उद्देश्य-राज्यपाल

राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति ही नहीं बल्कि चरित्र निर्माण भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ कौशल विकास पर भी ध्यान देना चाहिए, जिससे उन्हें रोजगार प्राप्ति में सहायता मिलेगी।

उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि लड़कियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं और अधिकांश शिक्षण संस्थानों में लड़कों से अधिक पदक जीत रही हैं। यह समाज में हो रहे सकारात्मक बदलाव का संकेत है। उन्होंने लड़कों की तुलना में अधिक पदक जीतने पर छात्राओं को बधाई भी दी।

श्री दत्तात्रेय ने कहा कि युवा किसी भी देश की सबसे बड़ी ताकत होती है और यह खुशी की बात है कि युवाओं की सबसे ज्यादा संख्या भारत में है।

राज्य विद्युत बोर्ड का हरोली में खुलेगा मण्डल और मुबारिकपुर में उपमण्डल

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों ऊना जिला के हरोली में राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटेड का मंडल और मुबारिकपुर में उप-मंडल खोलने की घोषणा की। उन्होंने पंजाब राज्य की सीमा से हिमाचल के लिए प्रवेश द्वार का नाम गुरु नानक देव चौक रखने की भी घोषणा की।

उन्होंने बेहडारा में स्टेडियम निर्माण और बदशाली-थोलियां व लबाणा बस्ती-नगनोली में बाढ़ प्रबंधन के लिए एक-एक करोड़ रुपये तथा सलोह अपरला में बाढ़ प्रबंधन के लिए दो करोड़ रुपये देने की घोषणा की।

पंजाब सीमा पर हिमाचल द्वार का गुरु नानक देव के रूप में होगा नामकरण

मुख्यमंत्री ने जिला ऊना के हरोली विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत (शेष पृष्ठ 11 पर)

हर घर को गैस कुनेक्शन देने वाला देश का पहला राज्य बनेगा हिमाचल

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने ऊना जिला में 149 करोड़ रुपये की लागत की विभिन्न परियोजनाओं के शिलान्यास व उद्घाटन के उपरांत एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि ऊना का बस अड्डा सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ राज्य का सबसे आधुनिक बस अड्डा है। उन्होंने कहा कि इसमें दो लिफ्ट, दो मल्टीप्लेक्स, शॉपिंग मॉल है।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की उज्ज्वला योजना के तहत नहीं आने वाले लगभग दो लाख परिवारों को मुफ्त गैस प्रदान करने के लिए राज्य सरकार द्वारा गृहिणी सुविधा योजना आरम्भ की गई है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष 27 दिसम्बर तक प्रदेश के प्रत्येक घर में गैस कुनेक्शन उपलब्ध करवाकर देश का पहला राज्य बनेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने राज्य के लोगों के (शेष पृष्ठ 11 पर)

आकर्षक प्रोत्साहनों से निवेश गंतव्य बना हिमाचल

आयुष एवं हेल्थ केयर योजनाओं से सभी को सुनिश्चत हुई स्वास्थ्य सेवाएं

युवाओं में कौशल विकास से रोजगार सृजन गतिविधियों को मिलेगा बढ़ावा

वेद प्रकाश

आज पूरा विश्व एक ऐसे ग्लोबल गांव में तबदील हो गया है, जहां सभी देश अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर है। इस बदलते परिवेश में कोई भी देश अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपसी सहयोग के बिना सही मायनों में आगे नहीं बढ़ सकता। आज दुनिया के सभी देश अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए विदेशी निवेश को बढ़ावा दे रहें हैं। हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी राज्य में निवेश आकर्षित करने की दिशा में अपने स्तर पर एक अनुकरणीय पहल की है, जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। हिमाचल प्रदेश एक शांतिप्रिय राज्य है जहां औद्योगिक विकास की अपार संभावनांए मौजूद हैं। प्रदेश का स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त वातावरण, निर्बाध विद्युत आपूर्ति, औद्योगिक निवेश के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन तथा पारदर्शी एवं कुशल प्रशासन कुछ ऐसे आकर्षण हैं जो प्रदेश को निवेश का पसंदीदा गंतव्य बनाते हैं। प्रदेश सरकार ने औद्योगिक क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए औद्योगिक नीति में पर्याप्त सुधार लाकर इसे निवेश मित्र बनाया है और उद्यमियों को यहां निवेश के लिए प्रेरित करने के लिए आकर्षक प्रोत्साहन प्रदान किए जा रहें हैं। औद्योगिक परियोजनाओं को शीघ्र स्वीकृति प्रदान करने तथा प्रशासन में पारदर्शिता लाकर समयबद्धता और जवाबदेही सुनिश्चित बनाने के लिए राज्य में एकल खिड़की प्रक्रिया को अपनाया गया है। प्रदेश में पर्यटन एवं आतिथ्य, नवीकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्य देखभाल, विनिर्माण एवं इंजीनियरिंग साजो-सामान, शिक्षा एवं कौशल विकास, फर्मास्यूटिकल्स, हाउसिंग व रियल एस्टेट, आईटी एवं इलैक्ट्रोनिक्स, इलैक्ट्रिक वाहनों, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने प्रदेश की आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए राज्य में विदेशी निवेश को आकर्षित करने की सार्थक पहल के तहत जर्मन, नीदरलैंड तथा संयुक्त अरब अमीरात का दौरा कर वहां बड़े औद्योगिक घरानों को हिमाचल में निवेश के लिए आमंत्रित किया। प्रदेश सरकार के इन गंभीर प्रयासों का ही प्रतिफल है कि 7 और 8 नवंबर, 2019 को धर्मशाला में आयोजित 'इन्वेस्टर्स मीट में 85 हजार करोड़ के लक्ष्य के मुकाबले 93 हजार करोड़ रुपये निवेश के 614 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। हिमाचल प्रदेश भले ही देश का एक छोटा राज्य है, लेकिन निवेश आकर्षित करने के लिए इसने ग्लोबल इन्वेस्टर मीट के रूप में अनुकरणीय पहल कर अन्य राज्यों को अपने स्तर पर आर्थिक संसाधन जुटाने की राह दिखाई है।

वर्तमान प्रदेश सरकार ने धर्मशाला ग्लोबल इन्वेस्टर मीट की सफल मेजबानी के जरिए उद्यमियों को हिमाचल के शांतिप्रिय माहौल, बेहतर कानून व्यवस्था, प्राकृतिक संसाधनों की क्षमता तथा ईज़ ऑफ डूईंग बिजनेस जैसे आकर्षक प्रोत्साहनों के साथ निवेश का वैश्विक मंच प्रदान किया है। इस मीट में सबसे अधिक जल विद्युत ऊर्जा एवं नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में 33852 करोड़ रुपये निवेश के एमओयू के बाद पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र में 15978 करोड़ रुपये निवेश के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अलावा मैन्यूफेक्चरिंग व फर्मा उद्योग में 13015 करोड़, हाउसिंग में 12278 करोड़, शहरी विकास एवं परिवहन क्षेत्र में 8938 करोड़, आईटी व इलेक्ट्रानिक्स में 2815 करोड़, खाद्य प्रसंस्कारण उद्योग में 2401 करोड़, शिक्षा और कौशल विकास क्षेत्र में 1902 करोड़ तथा स्वास्थ्य एवं आयुष में 1641 करोड़ रुपये निवेश के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर शिमला में हिम प्रगति पोर्टल पर निवेश परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए।

हिमाचल प्रदेश आयुष नीति-2019:- प्रदेश सरकार ने लोगों को घर-द्वार के निकट बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए हिमाचल प्रदेश आयुष नीति-2019 को स्वीकृति प्रदान कर स्वस्थ हिमाचल के सपने को साकार करने का मार्ग प्रशस्त किया। इसके तहत प्रदेश के आयुष अस्तपालों और औषधालयों को स्तरोन्नत किया जा रहा है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य द्वितीय एवं तृतीय स्तर पर आयुष चिकित्सा को कर रोगियों को आयुर्वेद स्वास्थ्य केन्द्रों में उपचार के लिए प्रेरित करना है। प्रदेश सरकार पहली बार ऐसी आयुष नीति लेकर आई है जिसके तहत आयुष एवं आरोग्य क्षेत्र में निवेशकों के लिए आकर्षक प्रोत्साहनों को शामिल किया गया है।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट में मैन्यूफेक्चरिंग व फर्मा उद्योग में 13015 करोड़, हाउसिंग में 12278 करोड़, शहरी विकास एवं परिवहन क्षेत्र में 8938 करोड़, आईटी व इलैक्ट्रानिक्स में 2815 करोड़, खाद्य प्रसंस्कारण उद्योग में 2401 करोड़, शिक्षा और कौशल विकास क्षेत्र में 1902 करोड़ तथा स्वास्थ्य एवं आयुष में 1641 करोड़ रुपये निवेश के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

इस नीति के तहत आयुष थेरेपी यूनिट स्थापित करने के लिए 25 प्रतिशत पूंजी उपदान का प्रावधान किया गया है, जिसकी अधिकतम सीमा एक करोड़ रुपये तक हो सकती है। इसमें भूमि पर किया गया खर्चा शामिल नहीं होगा और ऋण पर चार प्रतिशत ब्याज अनुदान भी दिया जाएगा, जो अधिकतम प्रतिवर्ष 15 लाख रुपये तक हो सकता है। निवेशकों को सात वर्षों के लिए 75 प्रतिशत की दर से शुद्ध जी.एस.टी. प्रतिपूर्ति की सुविधा भी दी जाएगी। निवेशकों को ऊर्जा बचत, पर्यावरण संरक्षण तथा महिला उद्यमियों को भी विशेष प्रोत्साहन दिए जाएंगे। इसके अतिरिक्त हिमाचली लोगों को रोज़गार प्रदान करने के लिए सहायता दी जाएगी और चयनित परियोजनाओं में लीज़ रेंट और स्टांप डयूटी में भी छूट दी जाएगी। हिमाचल प्रदेश दवाई के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और एशिया की 35 प्रतिशत दवाइयों का निर्माण प्रदेश में हो रहा है, जिसके कारण यह 'मेडिसीन हब' बनकर उभरा है।

आयुष्मान भारत :- विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना 'आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना जो देशभर में 50 करोड़ से अधिक लाभार्थियों के लिए उपलब्ध करवाई गई है, को हिमाचल प्रदेश में प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किया गया है। राज्य में राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना के सभी 4,83,643 पंजीकृत परिवारों को इस योजना में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त योजना में सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना-2011 के आधार पर राज्य में चयनित 2,78,245 परिवारों को शामिल किया गया है। इस प्रकार यह योजना प्रदेश की लगभग एक-तिहाई आबादी यानि 22 लाख लोगों को लाभान्वित करेगी।

हिमकेयर योजनाः- आयुष्मान भारत या अन्य किसी चिकित्सा प्रतिपूर्ति योजना में शामिल नहीं होने वाले परिवारों के लिए प्रदेश सरकार के अभिनव प्रयासों से दो योजनाओं मुख्यमन्त्री राज्य स्वास्थ्य देखभाल योजना व हिमाचल प्रदेश सार्वभौमिक योजना को जोड़कर नई 'हिमकेयर योजना' आरम्भ की है। योजना के अंतर्गत 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिक, 70 प्रतिशत से अधिक विकलांगता वाले व्यक्ति, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा सहायिकाएं, मिड-डे-मील कर्मी, अंशकालीक कर्मी, दिहाड़ीदार, अनुबंध कर्मचारी तथा आशा कार्यकर्ताओं को शामिल किया गया है। अन्य परिवार 1000 रुपये देकर योजना में कार्ड बनवा सकते हैं। योजना में एक परिवार के किसी भी सदस्य अथवा एक से अधिक सदस्यों को अस्पताल में भर्ती होने पर 5 लाख रुपये के निःशुल्क उपचार का प्रावधान है। योजना के तहत प्रदेश के लगभग 6.50 लाख लोगों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। इस योजना के अन्तर्गत अभी तक 47882 लोगों को उपचार सुविधा प्रदान करने पर 46.25 करोड़ रुपये तथा आयुष्मान भारत योजना के अन्तर्गत 39800 लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए 39.40 करोड़ रुपये व्यय किए गए।

सहारा योजनाः- आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों और गम्भीर बीमारी से पीड़ित लोगों की देखभाल के लिए राज्य में सहारा योजना भी आरम्भ की गई है, जिसके अन्तर्गत कैंसर, पक्षाघात, मांसपेशी से सम्बन्धित रोग, थैलेसीमिया और पार्किन्संस जैसी गम्भीर बीमारियों के उपचार के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इस महत्वपूर्ण योजना के तहत किडनी की गंभीर बीमारी अथवा व्यक्ति को स्थाई रूप से अक्षम करने वाली अन्य बीमारी से पीड़ित रोगियों को भी कवर किया जाएगा। सहारा योजना का मुख्य उद्देश्य गंभीर बीमारियों से पीड़ित रोगियों को लम्बे उपचार के दौरान पेश आने वाली कठिनाइयों को देखते हुए वित्तीय सहायता प्रदान करके उनके दुःख-दर्द को कुछ हद तक कम करना है। इस योजना के तहत लाभ प्राप्त करने के लिए समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के रोगी, जो गंभीर बीमारी का लम्बे समय से उपचार करवा रहे हैं और जिनकी चार लाख रुपये तक की पारिवारिक वार्षिक आय है, उन्हें इस योजना का लाभ मिल सकेगा। बीमारी की पुष्टि चिकित्सा बोर्ड द्वारा अथवा उपचार के ब्यौरे के साथ की जा सकेगी। बीमारी की पुष्टि अक्षमता प्रमाणपत्र से भी की जा सकती है। आर्थिक रूप से कमजोर व निर्धन लोगों की सहायता के लिए स्थापित 'मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोश' के अन्तर्गत 192 पात्र लोगों को चार करोड़ रुपये से अधिक की वित्तीय सहायता प्रदान की जा चुकी है।

कौशल विकास से रोजगार सृजनः- प्रदेश सरकार राज्य में शिक्षा के आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने तथा युवाओं में कौशल विकास को बढ़ावा देने जैसे कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता कर रही है। धर्मशाला ग्लोबल इन्वेस्टर्ज मीट के दौरान शिक्षा और कौशल विकास क्षेत्र में 1902 करोड रुपये निवेश के समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए जो इन क्षेत्रों के विकास के प्रति सरकार की गंभीरता को दर्शाता है। प्रदेश में युवाओं के कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करके रोजगार प्राप्त करने के योग्य बनाया जा सके। इस समय प्रदेश में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, एशियन विकास बैंक के सहयोग से कौशल विकास परियोजना तथा दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य विकास योजना चलाई जा रही है। इन सभी योजनाओं के अंतर्गत प्रदेश के लगभग एक लाख युवाओं को प्रशिक्षण देकर रोजगार प्राप्त करने के योग्य बनाया जाएगा।

एशियन विकास बैंक के साथ 650 करोड़ रुपये की 5 वर्षीय कौशल विकास परियोजना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस परियोजना के तहत 53 हजार से भी ज्यादा युवाओं का कौशल विकास किया जाएगा, 50 आई.टी.आई. स्तरोन्नत की जाएगी, 6 शहरी आजीविका केन्द्र तथा 7 ग्रामीण आजीविका केन्द्र खोले जाएंगे। एशियन विकास बैंक के सहयोग से चलाए जा रहे कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत तीन प्रशिक्षण सेवा प्रदाताओं को अल्प अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने के लिए सूचीबद्ध किया गया। इस कार्यक्रम के तहत प्रथम चरण में 7 हजार युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। एशियन विकास बैंक की इस परियोजना के अंतर्गत निगम द्वारा आदर्श कैरियर केन्द्र, हमीरपुर, राजकीय महिला तकनीकी महाविद्यालय, कांगड़ा, शहरी आजीविका केन्द्र, शमशी, शहरी आजीविका केन्द्र, सुन्दरनगर तथा शहरी आजीविका केन्द्र, नाहन के निर्माण कार्य आरम्भ किए। मंडी जिले में ग्रामीण आजीविका केन्द्र, सदयाना, शिमला जिला के ग्रामीण आजीविका केन्द्र, चौपाल तथा प्रगतिनगर के निर्माण कार्य भी आरम्भ किए गए। 77 करोड़ रुपये की लागत से दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना भी लागू की गई। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत 21.56 करोड़ रुपये की पहली किश्त प्राप्त। इससे लगभग 50,000 युवाओं को रोजगार सम्बन्धी कौशल प्रदान किया जाएगा। सभी रोजगार केन्द्रों को कौशल पहचान केन्द्रों तथा आदर्श कैरियर परामर्श केन्द्रों में परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया। इससे युवाओं के लिए परामर्श के माध्यम से रोजगार एवं प्लेसमेंट के अवसर बढ़ेंगे।

मुख्यमंत्री ग्राम कौशल विकासः- प्रदेश सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को रोजगार एवं स्वरोजगार साधन मुहैया करवाने के लिए 'मुख्यमंत्री ग्राम कौशल विकास' नामक नई योजना आरंभ की है जिसके तहत राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को आजीविका के अवसर उपलब्ध करवाने के साथ-साथ प्रदेश के पारंपरिक हस्तशिल्प एवं हथकरघा उत्पादों एवं इनके दस्तकारों को संरक्षण प्रदान किया जा रहा है। इस योजना से जहां ग्रामीण युवाओं के कौशल स्तरोन्नत करने में सहायता मिलेगी वहीं इससे स्थानीय दस्तकारों एवं शिल्पकारों द्वारा तैयार ग्रामीण हस्तशिल्प एवं हथकरघा उत्पादों के विपणन में भी मद्द मिलेगी।

निवेश आकर्षित करने में मददगार होंगी आवासीय और सूचना प्रौद्योगिकी नीतियांः- प्रदेश सरकार ने सूचना प्रोद्योगिकी में निवेश आकर्षित करने और लोगों के लिए किफायती आवास सुविधा प्रदान करने के लिए आई.टी. और आवासीय नीतियां तैयार की हैं, ताकि इन क्षेत्रों में निजी निवेश के माध्यम से अधोसंरचना प्रोत्साहन प्रणाली विकसित करने तथा शहरी क्षेत्रों के गरीब लोगों को किफायती दरों पर आवास सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों का पुनर्वास सुनिश्चित किया जा सके। प्रदेश सरकार ने राज्य में रियल एस्टेट क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए हि.प्र. रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी-रेरा स्थापित करने का निर्णय लिया है, ताकि रियल एस्टेट में विनयमन के साथ-साथ इस क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जा सके।

चण्डीगढ़-बद्दी रेल लाइन कार्य को तेज करने का आग्रह

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने नई दिल्ली में केन्द्रीय रेलवे मंत्री श्री पीयुष गोयल से भेंट कर चण्डीगढ़-बद्दी रेल लाइन के कार्य में तेजी लाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि यह रेल लाइन औद्योगिक क्षेत्र में परिवहन के लिहाज से महत्वपूर्ण है और साथ ही इससे प्रदेश में निवेशकों को आकर्षित करने में भी सहायता मिलेगी।

उन्होंने आग्रह किया कि ऊना-हमीरपुर रेल लिंक को भारत सरकार शत-प्रतिशत धन राशि उपलब्ध करवाए जिसके लिए मामला पहले ही केन्द्र से उठाया जा चुका है। उन्होंने कहा कि राज्यों के लिए कनैक्टिविटी एक बड़ा मुद्दा है और सड़कें ही परिवहन का मुख्य माध्यम है। इसलिए रेल नेटवर्क का विस्तार बहुत आवश्यक है ताकि प्रदेश की प्रगति को गति दी जा सके।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की नई दिल्ली में केन्द्रीय रेल व वित्त मंत्री से भेंट

मुख्यमंत्री ने भूतल अथवा ऊपर से बिजली व जलापूर्ति लाइने बिछाने का कार्य बिना शुल्क करने की स्वीकृति प्रदान करने और पहाड़ी राज्यों को लाइसेंस शुल्क से छूट देने का भी आग्रह किया। उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि माल यातायात विशेषकर पहाड़ी राज्यों में उत्पादित होने वाले कृषि एवं बागबानी उत्पादों पर भाड़ा कम करने पर विचार किया जाए।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने नई दिल्ली में केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण से भेंट कर आग्रह किया कि केन्द्र सरकार को सौंपी गई राज्य सरकार की बाह्य सहायता प्राप्त परियोजनाओं को शीघ्र स्वीकृति प्रदान की जाए। उन्होंने शिमला, मनाली, धर्मशाला रज्जू मार्गों, ओवर हैड परिवहन प्रणाली परियोजनाओं और वन प्रबन्धन आदि योजनाओं पर केन्द्रीय मंत्री से चर्चा की, जिन्हें केन्द्र सरकार को भेजा गया है।

वित्त मामलों के केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने भी इस चर्चा में भाग लिया।

युवा पीढ़ी से पुरातन सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का आह्वान

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर हमीरपुर के नेरी में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में राष्ट्रीय संगोष्ठी स्मारिका का विमोचन करते हुए।

हिमाचल प्रदेश को सदियों से साधु व ऋषि-मुनियों द्वारा तपोभूमि के रूप में अपनाने के कारण इसे देवभूमि का गौरव प्राप्त है। यही कारण है कि प्रदेश के जन-जीवन में इसकी अमिट छाप स्पष्ट दिखाई देती है। यह बात मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने ठाकुर जगदेव चन्द मेमोरियल शोध संस्थान, हमीरपुर और हिमाचल भाषा कला एवं संस्कृति अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में, नेरी, हमीरपुर में आयोजित 'पश्चिम हिमालय क्षेत्रों में ऋषि परम्परा' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारम्भ अवसर पर कही।

नेरी, हमीरपुर में 'पश्चिम हिमालय क्षेत्रों में ऋषि परम्परा' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश की समृद्ध ऋषि परम्परा को संजो कर रखना हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज के प्रतिस्पर्धी युग में हमने अपनी समृद्ध संस्कृति एवं परम्पराओं को पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि केवल वही समाज प्रगति कर सकता है, जो अपनी संस्कृति एवं परम्परा का सम्मान करता है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी युवा पीढ़ी को पूर्वजों द्वारा संजोई गई सांस्कृतिक धरोहर का आदर करने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि उनमें अपने पूर्वजों व संस्कृति के प्रति आदर-सत्कार की भावना जागृत हो सके।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि यह संस्थान प्रदेश की समृद्ध एवं विविध सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि इस प्रदेश को वैश्विक स्तर पर देवभूमि के नाम से जाना जाता है, जो हम सबके लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि प्रदेश का हर क्षेत्र किसी न किसी सन्त और ऋषि-मुनि से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि मनाली मनू-ऋषि और मण्डी माण्डव ऋषि आदि के नाम से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि ब्यास, मारकण्डा, पराशर आदि ऋषियों ने इस प्रदेश को अपनी तपो-स्थली बनाया था।

प्रसिद्ध संस्कृत के विद्वान एवं राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता महामाहोपाद्ययाय केशव शर्मा ने मुख्यमंत्री का संस्कृत को प्रदेश की दूसरी भाषा घोषित करने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार करने के लिए भी प्रदेश के प्रयासों की सराहना की।

संस्थान के महा सचिव भूमि दत्त शर्मा ने मुख्यमंत्री को शॉल व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने पर व्यय होंगे 1000 करोड़

सिंचाई एंव जन स्वास्थ्य, बागबानी व सैनिक कल्याण मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में पानी की समस्या को दूर करने के लिए सरकार एक हजार करोड़ रुपए खर्च करेगी। यह पैसा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाए गए जल जीवन मिशन के तहत व्यय किया जाएगा। इस मिशन के तहत हर घर को पाइप के जरिए पेयजल आपूर्ति का लक्ष्य है। मंत्री ने कहा कि प्रदेशभर में पुरानी पेयजल योजनाओं के सुधार के लिए काम किया जाएगा। वर्ष 2000 से पहले निर्मित पेयजल योजनाओं के जीर्णोद्धार पर एशियन विकास बैंक के माध्यम से 1000 करोड़ रुपए की राशि खर्च की जाएगी।

श्री महेंद्र सिंह ठाकुर ने यह जानकारी धर्मपुर विधानसभा क्षेत्र के सकोहटा, सकोह, लाम्बरी, दूली, चडबालका, छुहड़ा और लगयार गावों में आयोजित जन शिकायत निवारण शिविरों में लोगों से मुखातिब होते हुए दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों, बागबानों सहित प्रदेशवासियों को स्वच्छ पेयजल व बेहतर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प के अनुरूप प्रदेश सरकार हर घर में नल और नल में शुद्ध जल पहुंचाने के लिए काम कर रही है।

उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन (जेजेएम) में वित्त पोषण परिणामों के अनुरूप है। अच्छा प्रदर्शन करने वाले राज्य को केंद्र सरकार से अधिक धन मिलता है, जबकि कमजोर प्रदर्शन करने वाले राज्यों का हिस्सा घट जाता है।

232 करोड़ से बनेगा पाड़छू चेक डैम

सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य, बागबानी व सैनिक कल्याण मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने कहा कि धर्मपुर क्षेत्र के किसानों को बेहतर सिंचाई सुविधा देने के लिए पाइछू गांव में सतियार खड्ड पर चेक डैम बनाया जाएगा। इस चेक डैम के निर्माण पर 232 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसका प्राकलन (डीपीआर) तैयार कर मंजूरी के लिए केंद्र सरकार को भेजा गया है ।

श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने यह जानकारी गत दिनों धर्मपुर विधान सभा क्षेत्र के तहत विभिन्न जगहों पर आयोजित जनसमस्या निवारण शिविरों में लोगों से बातचीत के दौरान दी। उन्होंने कहा कि 40 मीटर ऊंचे बनने वाले पाइछू चेक डैम से क्षेत्र की दो दर्जन के करीब पंचायतों को लाभ होगा। इससे क्षेत्र की सिजाउपिपलू, सधोट, दरबाइ, चोलथरा, रखोह, धारपा, रोपड़ी, बरच्छबाइ इत्यादि पंचायतों की लगभग 2305 हेक्टेयर भूमि को समुचित सिंचाई सुविधा मिलेगी।

आधुनिक तकनीक से निकाला जाएगा बिरोजा

वन, परिवहन, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री श्री गोविंद सिंह ठाकुर ने कहा कि प्रदेश सरकार हिमाचल की बहुमूल्य वन संपदा के वैज्ञानिक दोहन एवं इन्हें सुरक्षित रखने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य वन निगम के माध्यम से भविष्य में बिरोजा निकालने की 'बोर होल प्रणाली' की दिशा में कार्य करेगी ताकि पेड़ों को होने वाली क्षति को न्यूनतम किया जा सके। श्री गोविंद सिंह ठाकुर सोलन जिला के नौणी स्थित डॉ. यशवंत सिंह परमार बागबानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय में पेड़ों से बिरोजा निकालने के लिए 'बोर होल प्रणाली' पर आयोजित कार्यशाला के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

श्री ठाकुर ने कहा कि हिमाचल की बहुमूल्य वन सम्पदा राज्य की आर्थिकी के लिए महत्वपूर्ण है। प्रदेश सरकार वर्ष 2030 तक प्रदेश के वन क्षेत्र को बढ़ाने की दिशा में कार्यरत है। उन्होंने इस दिशा में सभी से सहयोग का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हम प्रतिवर्ष वन महोत्सव आयोजित करते हैं और इस दौरान बड़ी संख्या में पौधे रोपित किए जाते हैं।

चम्बा में आरम्भ होगा सघन मिशन इन्द्रधनुष अभियान

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने सभी राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों/अधिकारियों से वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से सघन मिशन इन्द्रधनुष 2.0 अभियान के बारे विस्तार में चर्चा की। स्वास्थ्य मंत्री श्री विपिन सिंह परमार ने इस बैठक में भाग लेने के उपरान्त बताया कि इस अभियान के अन्तर्गत प्रदेश के चम्बा जिला को चिन्हित किया गया है, जहां इस सघन मिशन इन्द्रधनुष अभियान को चार चरणों में लागू किया जाएगा।

आयुष्मान और हिम केयर योजनाओं के तहत 87682 लाभार्थियों का निःशुल्क उपचार

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री विपिन सिंह परमार ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा आरम्भ महत्त्वाकांक्षी हिमकेयर योजना के तहत नए कार्ड आगामी जनवरी माह से बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हिमकेयर के तहत अब तक 5.50 लाख परिवारों को पंजीकृत किया जा चुका है तथा एक वर्ष पुराने कार्डों का नवीनीकरण किया जा रहा है।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में आयुष्मान भारत योजना से वंचित रह गए परिवारों के लिए हिमकेयर योजना आरम्भ की गई है जिसके अंतर्गत अस्पताल में भर्ती होने पर लाभार्थियों को पांच लाख रुपए के निःशुल्क उपचार की सुविधा का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि अब तक हिमकेयर योजना के अंतर्गत 47,882 लाभार्थियों को 46.25 करोड़ रुपए से अधिक का निःशुल्क उपचार उपलब्ध करवाया जा चुका है।

श्री विपिन परमार ने कहा कि प्रदेश में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना को भी प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है तथा अब तक इस योजना के तहत प्रदेश में लगभग पांच लाख पात्र परिवार हैं जिनमें से

हिमकेयर के तहत 5.50 लाख परिवार पंजीकृत

लगभग 63 प्रतिशत (30,4000) से अधिक परिवारों के गोल्डन कार्ड बन चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत प्रदेश में 39,800 से अधिक लाभार्थियों को 39.40 करोड़ रुपये के निःशुल्क उपचार की सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई है।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि आयुष्मान योजना के अंतर्गत प्रदेश में 199 अस्पतालों को पंजीकृत किया गया है जिनमें 52 निजी अस्पताल शामिल हैं। उन्होंने कहा कि लाभार्थियों को पंजीकृत अस्पतालों में इस योजना के तहत पांच लाख रुपये का निःशुल्क उपचार करवाने की सुविधा उपलब्ध है।

श्री विपिन परमार ने लोगों का आहवान किया है कि प्रदेश में आरम्भ इन योजनाओं का लाभ उठाने के लिए आगे आएं। उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत के अंतर्गत शेष लगभग 1.96 लाख परिवार नजदीकी लोक मित्र केन्द्र में आधार कार्ड और राशन कार्ड ले जा कर अपने गोल्डन कार्ड बनावा सकते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर उन्हें कोई परेशानी न हो।

उन्होंने कहा कि लाभार्थी अपनी पात्रता जानने के लिए टोल फ्री नम्बर 14555 तथा भारत सरकार की वेबसाइट mera.pmjay.gov.in पर लॉग इन कर सकते हैं।

हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण
गिरिराज

जीवन में हमेशा दूसरों को समझने का प्रयत्न करिए परखने का नहीं।
-अज्ञात

शीर्ष पर हिमाचल

किसी भी देश में स्वस्थ एवं सभ्य समाज के निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। शिक्षा और स्वास्थ्य दरअसल समाज की ऐसी बुनियादी जरूरतें हैं, जिनके बगैर कोई भी देश या समाज सही मायनों में प्रगति नहीं कर सकता। प्रदेश सरकार ने विकास में इन क्षेत्रों के अहम योगदान को ध्यान में रखते हुए इन्हें सदैव सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है। विकास के अनेक क्षेत्रों में किए जा रहे सार्थक प्रयासों के परिणामस्वरूप हिमाचल प्रदेश आज देश के उन गिने-चुने राज्यों में शुमार है जो विकास के अनेक मानकों में अन्य राज्यों से बेहतर है। लोगों को घर-द्वार के निकट विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने, स्कूलों में नर्सरी शिक्षा शुरू करने, अखंड शिक्षा ज्योति मेरे स्कूल से निकले मोती योजना, अटल आदर्श विद्यालय योजना, भाषा लेब, विजुअल शिक्षा जैसी अनुकरणीय पहलों की आज देशभर में सराहना हो रही है। प्रदेश सरकार के इन प्रयासों का ही परिणाम है कि हिमाचल प्रदेश को स्वास्थ्य एवं शिक्षा क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन के लिए 'इण्डिया टुडे स्टेट ऑफ द स्टेट्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया है। हिमाचल ने देश के बड़े राज्यों की श्रेणी में लगातार दूसरी बार शिक्षा क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्यों को शिक्षा के क्षेत्र में पछाड़ कर पुरस्कार प्राप्त करना हिमाचल के लिए गर्व की बात है। हिमाचल प्रदेश ने स्वास्थ्य क्षेत्र में एक और उपलब्धि हासिल करते हुए 'मुख्यमंत्री क्षय रोग निवारण योजना' के तहत प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था में बेहतर एवं अनुकरणीय कार्य प्रणालियों तथा नवाचारों पर गुजरात के गांधीनगर में आयोजित राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन में क्षय रोग जागरूकता के लिए आरम्भ की गई प्रदेश की 'टीबी मुक्त हिमाचल मोबाइल ऐप' को भी पुरस्कृत किया गया है। इसके अलावा प्रदेश में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग द्वारा एनएचएम के तहत लोगों को स्वास्थ्य एवं परामर्श सेवाओं के लिए चलाए जा रहे टोल फ्री कॉल सेन्टर-104 को भी पुरस्कृत किया गया है। हिमाचल प्रदेश इस समय 83 प्रतिशत साक्षरता दर के साथ केरल के बाद देशभर में दूसरे स्थान पर है। प्रदेश में वर्तमान में 15,556 सरकारी व 3252 निजी स्कूल, 139 डिग्री कॉलेज, पांच विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, छः मेडिकल कॉलेजों सहित आईआईटी और आईआईएम जैसे प्रतिष्ठित एवं अतंर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थान विद्यमान हैं, जबकि एम्स मेडिकल संस्थान प्रदेश में शीघ्र ही खुलने जा रहा है। इन संस्थानों के माध्यम से लोगों को उनके घरों के समीप गुणात्मक स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षण सुविधाएं मुहैया करवाई जा रही हैं। प्रदेश सरकार ने आयुष्मान भारत योजना के तहत न आने वाले लोगों की सुविधा के लिए राज्य के पंजीकृत अस्पतालों में निःशुल्क उपचार सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से हिमकेयर योजना आरम्भ की है। इस योजना के अन्तर्गत अभी तक 47882 लोगों को उपचार सुविधा प्रदान करने पर 46.25 करोड़ रुपये तथा आयुष्मान भारत योजना के अन्तर्गत 39800 लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने पर 39.40 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों और गम्भीर बीमारी से पीड़ित लोगों की देखभाल के लिए राज्य में सहारा योजना भी आरम्भ की गई है, जिसके अन्तर्गत कैंसर, पक्षाघात, मांसपेशी से सम्बन्धित रोग, थैलेसीमिया और पार्किन्संस जैसी गम्भीर बीमारियों के उपचार के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। आर्थिक रूप से कमजोर व निर्धन लोगों की सहायता के लिए स्थापित 'मुख्यमंत्री चिकित्सा कोष' के अन्तर्गत 192 पात्र लोगों को चार करोड़ रुपये से अधिक की वित्तीय सहायता प्रदान की जा चुकी है। प्रदेश सरकार के इन प्रयासों से यह प्रदेश जहां एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ राज्य बनकर उभरा है, वहीं लोगों को घर-द्वार के समीप बेहतर एवं विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ होने से 'स्वस्थ हिमाचल' का सपना भी साकार होता नज़र आ रहा है।

संविधान की अनुपालना सभी नागरिकों का कर्त्तव्य

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। वैसे तो चीन की आबादी भारत से ज्यादा है। परन्तु चीन के लोग अभी तक भी लोकतंत्र से महरूम हैं और साम्यवादी व्यवस्था में अपने विचारों व स्वतन्त्रता की तिलांजली देते हुए जीवन यापन कर रहे हैं। भारतीयों को इस सन्दर्भ में गनीमत यह रही की गुलामी की काली अँधेरी लंबी रात के छंटते ही लोकतंत्र का उजला सूर्य आसमान में चमकता मिला। यह हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों की भावना का ही परिणाम था कि हमें ऐसा नायाब तोहफा मिला। लेकिन लोकतंत्र की स्थापना से ही भारत में असली चुनौतियों का प्रारम्भ हुआ। इनमें से सबसे बड़ी चुनौती थी संविधान के निर्माण की। लोकतंत्र की कल्पना संविधान के बिना ठीक वैसे ही है जैसे बिना ब्रेक गाड़ी की होती है।

भारत में आजादी के बाद भारतीय नेताओं को इस देश रुपी गाड़ी के चालक परिचालक का दायित्त्व दे अंग्रेज तो चले गये परन्तु गाड़ी को कैसे विकास के पथ पर आगे लेकर जाना है? कैसे इसे सम्भालना है? इसका पूरा दारोमदार अब भारतीय नेताओं के कंधों पर आ गया। उस समय के हमारे दूरदर्शी नेताओं ने हमें साम्यवाद की जंजीरों में जकड़ने के बजाय लोकतंत्र की खुली हवा में साँस लेने का अवसर देते हुए अपने देश का भाग्य निर्माता बनाने का निर्णय किया। लेकिन बिना किसी नियम के तो एक परिवार को चलाना भी असम्भव है तो फिर कश्मीर से कन्याकुमारी व गुजरात से असम तक फैले भारत जैसे विशाल देश को भला बिना नियम कैसे चलाया जा सकता था इस समस्या का एक ही हल था। देश में एक संविधान हो और हर कोई उस संविधान के दायरे में रह कर ही अपने कार्य को अंजाम दे।

नव स्वतंत्र राष्ट्र की ओर जहाँ विश्व के कई देश टकटकी लगाए देख रहे थे तो वहीं कुछ देश ऐसा भी मान रहे थे की भारत जैसे विशाल देश में एक संविधान का निर्माण करना व उसे सभी पर लागू कर पाना संभव नहीं हो सकेगा। खैर भारत ने सहर्ष इस चुनौती को स्वीकार किया और भारत के सबसे बुद्धिजीवी महान नेता व कानून शास्त्री बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर की अध्यक्षता में इस जटिलतम कार्य की शुरुआत कर दी। भीम राव अम्बेडकर के नेतृत्व में संविधान सभा ने विश्व के अनेकों देशों के संविधानों का गहन अध्ययन किया। 2 वर्ष 11 महीने व 18 दिन की कड़ी मुशक्कत के बाद जब भारत का संविधान बना तो हर कोई हैरान था। यह विश्व का सबसे बड़ा संविधान था जिसे की अब विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र को चलाना था। इसमें कुल 448 अनुच्छेद, 12 अनुसूचियां और 94 संशोधन शामिल हैं।

देश के नागरिक होने के नाते हमारा भी यह परम दायित्त्व है कि संविधान की रक्षा को अपना धर्म समझे। सरकार चाहे कोई भी हो संविधान की अनुपालना करना ही उसकी कसौटी है। यह संविधान ही है जो हमारे हितों की रक्षा करता है। देश के हर नागरिक में संविधान को लेकर जागरूकता पैदा करना ही संविधान दिवस का उद्देश्य होना चाहिए।

संविधान में दिए मौलिक अधिकारों की तो हर कोई बात करता है, लेकिन देश के प्रति जिम्मेदारियों से हम सब पीछे हट जाते हैं। संविधान में वर्ष 1976 में अपनाए गए 42वें संशोधन में नागरिकों के मौलिक कर्त्तव्यों को सूचीबद्ध किया गया है। इस संशोधन के बाद हमारा संविधान नागरिकों को संविधान का पालन करने, आदर्श विचारों को बढ़ावा देने और अनुसरण करने का आदेश देता है। सरदार स्वर्ण सिंह समिति की अनुशंसा पर संविधान के 42वें संशोधन के तहत मौलिक कर्त्तव्यों को जोड़ा गया। संविधान में वर्णित प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य बनता है कि वह संविधान पालन और राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

युद्धवीर टंडन

भारत का संविधान अपने आप में इस संविधान की हर विशेषता इसे बाकी सभी देशों के संविधान से अलग बनाती है। संविधान को क्योंकि देश को चलाना होता है तो समय के साथ कहीं वो पुराना न हो जाए इसलिए उसमें संशोधन की गुंजाइश होना नितांत आवश्यक है। भारतीय संविधान जो इतने वर्षों से अपना कार्य इतनी दक्षता के साथ कर रहा है इसके पीछे भी सबसे बड़ा कारण इसका कठोर व लचीले का मिश्रित रूप होना है। अतः हमारा संविधान एक जीवंत दस्तावेज है जो कि समय, परिस्थितियों व घटनाओं के अनुसार स्वयं में परिवर्तन करने में सक्षम है।

संविधान दिवस का महत्त्व इसलिए भी खास हो जाता है चूँकि इस वर्ष भारत को इस संविधान को अंगीकृत किए 70 वर्षों का बहुत बड़ा अरसा पूरा होने जा रहा है। 26 नवम्बर 1949 के ही दिन हमारे संविधान का मसौदा तैयार करके उसे स्वीकृति के लिए संविधान सभा के पास लाया गया। जिसे की संविधान सभा में इसी दिन स्वीकार किया था। बाबा साहेब के अनुयायीयों द्वारा तो इस दिन को बहुत पहले से ही मनाया जाता रहा है लेकिन भारत सरकार में 19 नवम्बर 2015 की घोषणा से ही बाबा साहेब के 125वें जयंती वर्ष के रूप में इस दिन को मनाना शुरू किया है। इसी दिन बनकर तैयार हुए संविधान को आगे जाकर भारत सरकार में 26 जनवरी 1950 में पुरे देश में लागू किया गया।

भारत के संविधान ने देश में सबके लिए समानता, स्वतन्त्रता व न्याय जैसे उच्च मानवीय आदर्श न केवल स्थापित ही किए बल्कि उनकी हर आम व खास नागरिक तक पहुँच भी अपने विभिन्न प्रावधानों तथा मौलिक अधिकार व राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों से सुनिश्चित की। संविधान का मौलिक ढांचा कोई भी छेड़ नहीं सकता। इसके लिए संविधान में शक्ति सन्तुलन जैसे महान सिद्धान्त की व्यवस्था है। जिससे विधानपालिका पर कार्यपालिका और कार्यपालिका पर न्यायपालिका की तथा इन तीनों पर एक दूसरे की सर्वोच्चता स्थापित है। इस प्रकार संविधान ही वास्तव में सर्वोच्च शक्ति है। आज 70 वर्षों के बाद पूरे देश में अपने संविधान को लेकर एक आस्था विकसित हुई है और यह उस सवाल का जबाब भी है कि क्या संविधान स्थायी रह पाएगा या नहीं?

देश के नागरिक होने के नाते हमारा भी यह परम दायित्त्व है कि संविधान की रक्षा को अपना धर्म समझे। सरकार चाहे कोई भी हो संविधान की अनुपालना करना ही उसकी कसौटी है। यह संविधान ही है जो हमारे हितों की रक्षा करता है। देश के हर नागरिक में संविधान को लेकर जागरूकता पैदा करना ही संविधान दिवस का उद्देश्य होना चाहिए। वास्तविक लोकतन्त्र का सपना व बाबा साहेब का यह प्रयास तभी सफल हो सफल हो सकता है अगर सभी नागरिक अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति एक समान रूप से सचेत होंगे। बाबा साहेब को इस संविधान दिवस यही हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी।

औद्योगिक विकास की सुगबुगाहट

प्रदेश का समग्र विकास तभी संभव हो पाएगा जब युवा शक्ति के हाथ में रोजगार होगा। आज का हिमाचली युवा प्रतिमाह 4-5 हजार की नौकरी करने के लिए अपना घर बार छोड़कर बाहरी राज्यों की तरफ रुख कर रहा है क्योंकि हिमाचल प्रदेश में कृषि व्यवस्था भी वर्तमान में घाटे का सौदा बन चुकी है।

हिमाचल प्रदेश सरकार का सालाना बजट करीब 43,000 करोड रुपए का है जबकि धर्मशाला इन्वेस्टर्स मीट में बजट से दो गुणा से ज्यादा एमओयू साइन होना ऐतिहासिक लम्हा है। अब प्रदेश सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि निवेशकों के एमओयू को धरातल पर किस तरह से उतारा जाए। विपक्ष इन्वेस्टर्स मीट पर कड़ी प्रतिक्रियाएं जाहिर कर चुका है तथा इसे महज कर्ज में डूबे प्रदेशवासियों के पैसे से मौज मस्ती का मंच बता कर सुर्खियां बटोरने का प्रयास रहा है। जयराम सरकार के लिए प्रसन्नता का विषय यह है कि विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी इन्वेस्टर्स मीट में भारत तथा विदेशी निवेशकों द्वारा उत्सुकता दिखाई गई। इस इन्वेस्टर्स मीट में संयुक्त अरब अमीरात को प्रदेश का सहभागी देश बनाया गया। हिमाचल प्रदेश को वैश्विक पटल पर फल राज्य के रूप में जाना जाता है। प्रदेश में फल एवं खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां और भंडार स्थापित करने के लिए तथा उर्जा, पर्यटन, उद्योग, हाउसिंग क्षेत्र में अपार संभावनाएं है।

मंडी जिला से प्रथम प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाले सौभाग्यशाली मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर जी औद्योगिक निवेश के लिए जाने जाएंगे। हिमाचल प्रदेश जैसे विपरीत भौगोलिक परिस्थितियों वाले प्रदेश में भी निवेशक निवेश करते हैं तो सच में यह प्रदेश वासियों के लिए किसी बड़ी सौगात से कम नहीं होगा। लेकिन प्रदेश सरकार की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है क्योंकि हिमाचल प्रदेश में उद्योग स्थापित करने के लिए धारा 118, बिजली, पानी एनजीटी से पर्यावरण अनुमति इत्यादि अनेक समस्याओं को भी सरल व सुगम बनाना होगा ताकि उद्यमियों को उद्योग स्थापित करने के लिए विभिन्न तरह की औपचारिकताओं में अपना समय तथा धन बर्बाद न करना पड़े। ऐसे में सरकार को अफसरों पर भी कड़ी नजर रखानी होगी क्योंकि निवेशकों को यह विश्वास दिलाना जरूरी है कि प्रदेश में यदि आप निवेश करते हैं तो सरकार आपको बेहतर सुविधाएं देने के लिए दृढ़ संकल्पित है। हिमाचल प्रदेश में परिवहन के लिए एकमात्र सड़क व्यवस्था ही है। औद्योगिक विकास के लिए कच्चा माल भी आयातित करना पड़ता है। प्रदेश सरकार को सड़कों की स्थिति को भी तीव्र गति से सुधारना होगा तथा भविष्य में रेल मार्ग तथा जल मार्गों पर भी कार्य करने की आवश्यकता होगी ताकि निवेशक आसानी से कच्चा माल प्राप्त कर सके तथा तैयार माल को वैश्विक पटल पर सुगमता से पहुंचाया जा सके।

औद्योगिक निवेश में हिमाचली युवाओं को 70 प्रतिशत रोजगार हर हालत में मिलना ही चाहिए। प्रदेश सरकार युवाओं को उद्यमशीलता के गुणों से अवगत करवाने के लिए विशेष कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था पर भी ध्यान दें ताकि हिमाचल के युवा भी उद्यमी बन सके। प्रदेश का समग्र विकास तभी संभव हो पाएगा जब युवा शक्ति के हाथ में रोजगार होगा। आज का हिमाचली युवा प्रतिमाह 4-5 हजार की नौकरी करने के लिए अपना घर बार छोड़कर बाहरी राज्यों की तरफ रुख कर रहा है क्योंकि हिमाचल प्रदेश में कृषि व्यवस्था भी वर्तमान में घाटे का सौदा बन चुकी है। ऐसे में युवा वर्ग शोषित तथा अकेला पड़ गया है। नशे के शातिर कारोबारी उसकी इसी मजबूरी का फायदा उठाकर उसे नशे के जाल में फंसा लेते हैं। युवा शक्ति को सक्षम बनाने के लिए औद्योगिक निवेश तथा सरकार की नीतियां महत्वपूर्ण होती है। कुछ ऐसी ही उम्मीद आज का युवा वर्ग प्रदेश सरकार से कर रहा है।

● कर्म सिंह ठाकुर

कृषक मित्र

ट्राऊट मछली उत्पादन में अग्रिम राज्य बना हिमाचल

ट्राउट मछली उत्पादन में हिमाचल प्रदेश देश के अग्रणी राज्यों में गिना जाने लगा है। हिमाचल प्रदेश में इस साल रिकॉर्ड 685 मीट्रिक टन ट्राउट मछली उत्पादन रिकॉर्ड किया गया। राज्य सरकार ने नीली क्रान्ति (ब्लू रेवोलूशन) के अन्तर्गत राज्य के शिमला, चम्बा, कांगड़ा में ट्राउट मछली का बिक्री केंद्र खोलने का फैसला किया है ताकि ट्राउट मछली उत्पादकों को आकर्षक मूल्य मिल सके। ' हिमाचल प्रदेश में कुल 3000 किलो मीटर लम्बे नदीय क्षेत्र में से ट्राउट मछली का उत्पादन ब्यास, सतलुज और रावी

गिरधारी लाल महाजन

नदियों के ऊपरी बर्फीले क्षेत्रों में शून्य से बीस डिग्री नीचे तापमान में लगभग 600 वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में किया जाता है।

राज्य के कुल्लू , मण्डी, शिमला, किन्नौर , चम्बा, काँगड़ा और सिरमौर जिलों के ऊपरी बर्फीले क्षेत्रों में वर्ष 2018 -19 के दौरान 2558 लाख रुपये कीमत की 568.443 मीट्रिक टन ट्राउट मछली का उत्पादन किया गया। राज्य सरकार ने वर्ष 2020 -21 के दौरान 800 मीट्रिक टन एवं वर्ष 2021-22 के दौरान 950 मीट्रिक टन ट्राउट मछली उत्पादन का लक्ष्य रखा है। राज्य के मछली पालन विभाग ने ट्राउट मछली उत्पादन बढ़ाने की एक महत्त्वकांक्षी योजना शुरू की है जिसके अन्तर्गत ट्राउट मछली उत्पादन करने वाले 940 ट्राउट यूनिट्स को राजस्व लाभ केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा ताकि ट्राउट मछली उत्पादक क्षेत्रों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति सुदृड़ की जा सके। ट्राउट मछलियों की मोबाइल वैन के माध्यम से मार्केटिंग के लिए सरकार चालू वित्त वर्ष में ट्राउट क्लस्टर स्थापित करेगी। सरकार ने ट्राउट मछली की देश के महानगरों में मार्केटिंग की एक महत्वकांक्षी योजना शुरु की है जिसके अन्तर्गत आगामी वर्षों के दौरान ट्राउट मछली का ज्यादातर उत्पादन मेट्रो शहरों के पांच तारा होटलों में बेचने की योजना है ताकि ट्राउट मछली उत्पादन से जुड़े लगभग पांच सौ परिवारों को आकर्षक मूल्य दिला कर ट्राउट मछली उत्पादन को आकर्षक पेशे की तरह विकसित किया जा सके। इस समय कुल ट्राउट मछली उत्पादन का आधा हिस्सा दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता जैसे शहरों के पांच तारा होटलों में बेचा जाता है।

राज्य के मछली पालन विभाग ने सेंट्रल मैरीन फिशरीज रिसर्च इंस्टिट्यूट कोच्ची के संयुक्त तत्वाधान में ट्राउट मछली की ऑनलाइन सेल के लिए एक पोर्टल विकसित करने का फैसला किया है

राज्य सरकार ट्राउट मछली उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए राज्य के कुल्लू जिले के पतलीकूहल और हमनी, चम्बा जिले के होली, थल्ला और भांदल मण्डी जिला के बरोट, किन्नौर जिला के सांगला और शिमला जिला के धामवारी में ट्राउट फार्म स्थापित किये हैं। राज्य सरकार ने राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत राज्य के कुल्लू, मण्डी, शिमला, किन्नौर, चम्बा, काँगड़ा और सिरमौर जिलों में निजी क्षेत्रों में 29 ट्राउट मछली पालन केन्द्र विकसित करने की योजना स्वीकृत की है। प्रत्येक हैचरी में दो लाख ट्राउट अण्डा उत्पादन की क्षमता होगी

राज्य सरकार ट्राउट मछली उत्पादकों को अच्छी गुणवत्ता का बीज और चारा प्रदान करने के लिए राज्य में फिश सीड सर्टिफिकेशन एंड एकरीडीटेशन एजेंसी स्थापित करेगी।

प्रदेश मछली पालन विभाग ने ट्राउट मछली उत्पादन बढ़ाने की एक महत्त्वकांक्षी योजना शुरू की है जिसके अन्तर्गत ट्राउट मछली उत्पादन करने वाले 940 ट्राउट यूनिट्स को राजस्व लाभ केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा ताकि ट्राउट मछली उत्पादक क्षेत्रों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति सुदृढ़ की जा सके।

विभाग ट्राउट वैल्यू चौन के उत्पादन के आधुनिकीकरण के लिए सेन्ट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ फिशरीज टेक्नोलॉजी कोच्ची के संयुक्त तत्वाधान में कल्लू के पतलीकूहल में कैनिंग यूनिट स्थापित कर रही है।

सरकार ने निजी क्षेत्र में ट्राउट फिश फार्मिंग को प्रोत्साहन देने के लिए ट्राउट रसेवैस/ट्राउट इकाइयां, हैचरीज, फीड मिलस, रिटेल आउटलेट आदि खोलने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करने का फैसला किया है। ट्राउट मछली उत्पादकों को राज्य सरकार बीमा योजना के अन्तर्गत भी लाभान्वित कर रही है।

ट्राउट

मछली उत्पादन को हिमाचल प्रदेश में मुख्यता पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू किया गया था। ट्राउट मछली में प्रोटीन, पोटैशियम, फास्फरोस, विटामिन बी काम्प्लेक्स विद्यमान होते हैं जोकि मानव स्वास्थ्य के भोजन का महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। राज्य की कृषि मौसम की परिस्थियाँ ट्राउट मछली उत्पादन में अत्यन्त सहायक मानी जाती है।

राज्य में ट्राउट मछली उत्पादन को ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में विद्यमान बर्फीले पानी के अधिकतम उपयोग के लिए शुरू किया गया है। फिश फार्मिंग में नवीन तकनीकों के आने से ट्राउट मछली उत्पादन को मानव उपयोग के लिए भी पैदा करना सम्भव हो गया है।

इस समय राज्य के लगभग सभी ठन्डे बर्फीले क्षेत्रों में ट्राउट का उत्पादन किया जा रहा है। राज्य में ब्राउन ट्राउट तथा रेनबो ट्राउट दो मुख्य किस्में पाई जाती हैं तथा ट्राउट मछली को व्यापारीकरण के नजरिये से ज्यादा से ज्यादा उत्पादित किया जा रहा है। ट्राउट मछली अब ठन्डे क्षेत्रों की बायोटिक लाइफ का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। हालाँकि नदीय क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भवन निर्माण तथा विभिन्न सरकारी परियोजनाओं की वजह से हुए निर्माण कार्यों से ट्राउट मछली उत्पादन को झटका लगा है लेकिन ट्राउट फार्मों तथा निजी क्षेत्रों द्वारा ट्राउट उत्पादन में हिस्सेदारी से इस नुकसान की भरपाई भी हुई है तथा राज्य में ट्राउट मछली उत्पादन ने सभी कठिनाइओं और परेशानियों के बाबजूद अपनी विकास यात्रा जारी रखी है।

हालाँकि राज्य में ट्राउट मछली उत्पादन सन 1900 से दर्ज किया जा रहा है लेकिन यह मात्र इके दुके निजी प्रयासों से ही अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जा रहा था। राज्य में ट्राउट मछली पालन के व्यापारिक/वाणिज्यिक उत्पादन की नींव वर्ष 1988 में नॉर्वे सरकार द्वारा स्वीकृत परियोजना से पड़ी जिसके माध्यम से राज्य सरकार को ट्राउट मछली उत्पादन में नवीनतम टेक्नोलॉजी तथा उत्पादन की जानकारी प्रदान की गयी जिससे ट्राउट मछली उत्पादन में एक नए युग का शुभारम्भ हुआ। इस परियोजना के अन्तर्गत दस टन क्षमता ट्राउट मछली पालन क्षमता के ट्राउट फार्म स्थापित किये गए, रोगों से मुक्त बीज अण्डे , सस्ते दरों पर अच्छी गुणवत्ता का आहार, स्थानीय स्टाफ को मछली पालन के विभिन्न पहलुओं पर गहन प्रशिक्षण सहित किसानों को कम कीमत पर फिंगरलिंग्स प्रदान किये गए ताकि किसान ट्राउट फार्मिंग के प्रति आकर्षित हो सकें। इस परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए नॉर्वे सरकार ने उपकरणों की कीमत, मानव संसाधन विकास, स्टाफ और किसानों के प्रशिक्षण आदि के लिए लगभग तीन करोड़ की सहायता राशि जारी की, जबकि राज्य सरकार ने फार्म निर्माण, कस्टम ड्यूटी और प्रोजेक्ट कर्मचारियों के वेतन आदि की जिम्मेदारी वहन की।

इस परियोजना के पहले चरण को अगस्त 1989 में चालू किया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत रेस वैस, सर्कुलर पोंड्स तथा दो लाइनों की वाटर सप्लाई जैसी ढांचागत सुविधाओं को अप्रैल 1990 में पूरा किया गया जबकि रैनबो ट्राउट की 'आइड ओवा' की पहली किस्त पतलीकूहल में अप्रैल -1991 में पहुंची। इस दौरान एक फीड मिल स्थापित की गई जिसमें पांच सौ किलो दैनिक क्षमता के फीड का उत्पादन शुरू हुआ।

उत्पादन के प्रारम्भिक चरण में दो महिलाओं सहित कुल चार लोगों को ट्राउट मछली पालन का प्रशिक्षण दिया गया। ट्राउट उत्पादन परियोजना के पहले साल में ही भारतीय एवं नॉर्वे अधिकारीयों की उम्मीदों से कहीं ज्यादा उत्पादन ने आशाओं के अम्बार लगा दिए। इस दौरान 'आइड ओवा' के 42 प्रतिशत जीवत दर के अनुमान के मुकाबले लगभग 92 प्रतिशत जीवत दर रिकॉर्ड की गई जोकि एक नया रिकॉर्ड साबित हुआ। इस दौरान रिकॉर्ड 92 प्रतिशत जीवत दर से भण्डारण की समस्या पैदा हो गई तथा लगभग 38000 फिंगरलिंग्स को फार्म से बाहर निकाल कर तीर्थन, सैंज, पार्बती, ब्यास, गढ़सा आदि नदियों में स्थानान्तरित करना पड़ा तथा एक साल के भीतर ही ट्राउट मछली का आकार 300 ग्राम तक पहुँच गया जोकि मार्किट में बेचने के काबिल था। नॉर्वे सरकार से अण्डों की दूसरी किश्त मार्च 1992 में प्राप्त हुई जिसको सफलतापूर्वक हैच कर लिया गया। राज्य में ट्राउट की पहली सेल मार्च 1992 में शुरू की गई तथा ट्राउट मछली उत्पादन का दस टन उत्पादन का लक्ष्य परियोजना के पहले साल में ही प्राप्त कर लिया गया जबकि इस दौरान अधिकारियों को भारी बारिश, भू स्लखन आदि प्राकृतिक आपदाओं से भी रू-ब-रू होना पड़ा।

स्नोपीज़: मध्य और ऊंची पहाड़ियों के लिए एक विदेशी सब्जी

स्नोपीज़ को बाजार में मिला अच्छा दाम

हाल ही के वर्षों में उपभोक्ता मांग में काफी बदलाव आया है जिससे बागबानी क्षेत्र भी प्रभावित हुआ है। ऐसा ही एक बदलाव देश के महानगरों, शहरों और पर्यटन स्थलों में विदेशी सब्जियों की बढ़ती मांग है। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषि विविधता की आवश्यकता और बागबानी फसल पैटर्न में बदलाव की दिशा में अनेक प्रयास किए जा रहें हैं।

कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) शिमला, जो की डॉ. वाईएस परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के प्रबंधन के तहत कार्य करता है, द्वारा शुरू की गई ऐसी ही एक सक्रिय पहल ने किसान और वैज्ञानिकों को काफी उत्साहजनक परिणाम दिए हैं। पिछले तीन वर्षों से केंद्र के वैज्ञानिकों ने जिला में विभिन्न विदेशी सब्जियों की खेती को शुरू करने और बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किया है। विदेशी सब्जियां जैसे स्नोपीज़ (सलाद के मटर), लेट्यूस, पोक चोई, केल, कौरगेटस, चेरी टमाटर और बीज रहित खीरे पर किसान के खेतों में परीक्षण लगाए गए हैं।

कृषि विज्ञान केंद्र शिमला में कार्यरत सब्जी वैज्ञानिक डॉ. अशोक ठाकुर उपयुक्त उत्पादन क्षेत्र के चयन और इन सब्जियों के रोपण सीजन के लिए विभिन्न मौसमों में परीक्षण कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि केंद्र के कई विविधीकरण पहलों में से एक, किसान के खेत में स्नोपीज़ की ऑफ-सीजन खेती का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया है और इसके परिणाम अत्यधिक उत्साहजनक रहे हैं। राकेश दुल्टा जो कि तहसील रोहडू के शील गाँव के एक प्रगतिशील किसान हैं, के खेत में लगाए गए स्नोपीज़की मिथी फली किस्म के परीक्षणों में लगभग सात क्विंटल प्रति बीघा की उत्पादकता प्राप्त हुई है।

उच्च गुणवत्ता वाला यह उत्पाद नई दिल्ली की आजादपुर सब्जी मंडी में 200-300 रुपये प्रति किलोग्राम की कीमत से बिका। परीक्षणों के परिणामों से उत्साहित,राकेश दुल्टा अब साथी किसानों को इस क्षेत्र में स्नोपीज़ और अन्य विदेशी सब्जियों की व्यावसायिक खेती को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेगें।

स्नोपीज़ में खाने योग्य फली होती है जो विभिन्न पोषक तत्वों से युक्त है। इसे सलाद के रूप में अत्यधिक पसंद किया जाता है। फली की भीतरी तरफ परत का अभाव, इसे कच्चे रूप में भी खाने के लिए उपयुक्त बनाता है। हालांकि, फली को पकाया भी जा सकता है। स्नोपीज़ विटामिन ए, बी6 और सी का एक अच्छा स्रोत है। इसके अलावा, आहार फाइबर का एक उत्कृष्ट स्रोत हैं और इसमें फोलेट और पोटेशियम भी होता है।

डॉ. ठाकुर ने बताया कि विभिन्न विदेशी सब्जियों को सफलतापूर्वक मध्य और ऊँची पहाड़ियों में उगाया जा सकता है और यह किसानों की आय बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। ये फसलें सेब और अन्य फलों की फसलों के साथ इंटरक्रोपिंग करने के लिए सबसे उपयुक्त हैं। केवीके शिमला के प्रभारी डॉ. एनएस कैथ ने कहा कि सेब उगाने वाले क्षेत्रों का कम अवधि के उच्च मूल्य वाली नकदी फसलों के साथ विविधीकरण पहाड़ी राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए एक वरदान बन सकता है।

विभिन्न विदेशी सब्जियों को सफलतापूर्वक मध्य और ऊँची पहाड़ियों में उगाया जा सकता है और यह किसानों की आय बढ़ाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। ये फसलें सेब और अन्य फलों की फसलों के साथ इंटरक्रोपिंग करने के लिए सबसे उपयुक्त हैं।

नौणी विवि के कुलपति डॉ. परविंदर कौशल ने वैज्ञानिकों द्वारा किए गए प्रयासों कि सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय राज्य में बागवानी के विविधीकरण के लिए लगातार प्रयास कर रहा है।

उन्होंने वैज्ञानिकों से अधिक से अधिक किसानों को ऐसी विविधता रणनीतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने का आग्रह किया, जो न केवल एक फसल पर उनकी निर्भरता को कम करेगा बल्कि उनकी आय को बढ़ाने में मददगार होगा। निदेशक अनुसंधान डॉ. जेएन शर्मा और निदेशक विस्तार शिक्षा डॉ. राकेश गुप्ता ने भी वैज्ञानिकों के प्रयासों की प्रशंसा की।

ब्रॉकली उत्पादन कर दिखाई स्वावलंबन की राह

सिरमौर जिला की राजगढ़ तहसील के साथ लगते पीरन गांव की प्रगतिशील किसान अंबिका ठाकुर द्वारा ब्रॉकली का उत्पादन करके एक नई पहल आरंभ की गई है जोकि काफी कामयाब रही है जबकि अभी तक ब्रॉकली का व्यापक रूप से किसानों द्वारा उत्पादन नहीं किया जा रहा है । अंबिका ठाकुर और उनकी सास कमलेश ठाकुर का कहना है कि ब्रॉकली को उगाने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती है और ब्रॉकली की खुले बाजार में काफी अधिक मांग है। उन्होंने बताया कि दिल्ली सब्जी मण्डी को भेजे गए प्रथम अलॉट में ब्रॉकली 180 रूपये प्रति किलोग्राम बिकी जबकि इसके उपरांत इसका रेट कुछ कम हुआ है इसके बावजूद भी उन्हें ब्रॉकली के बहुत अच्छे दाम मिले जबकि टमाटर में इससे अधिक मेहनत करनी पड़ती है।

उन्होंने बताया कि ब्रॉकली की वर्ष में तीन बार फसलें ली जा सकती है जिसके लिए सिंचाई की काफी आवश्यकता रहती हैं । उन्होंने बताया कि ब्रॉकली के दो प्रकार के बीज मिलते हैं जिसमें किसान अपनी सुविधानुसार 90 दिन और 60 दिन में ब्रॉकली को उत्पादित कर सकते हैं।

शिक्षित अंबिका स्वयं नीरज ठाकुर नकदी फसलों

बी.आर. चौहान

होने के बावजूद और अपने पति के साथ खेतों में का उत्पादन करती हैं जोकि उनकी आय का प्रमुख साधन है जिसके माध्यम से उनके परिवार की सभी रोजमर्रा की जरूरते पूरी होने के अतिरिक्त घर में सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। उनका यह भी कहना है कि कृषि में स्वरोजगार के सर्वाधिक अवसर विद्यमान है और बेरोजगार युवाओं को सरकारी नौकरी की तलाश में अपना समय बर्बाद नहीं करना करना चाहिए बल्कि खेती करके स्वाभिमान से जीवन यापन करना चाहिए।

कृषि विशेषज्ञ राजगढ़ अंजलि कटोच ने बताया कि ब्रॉकली में हाई फाइबर और प्रोटीन भरपूर मात्रा में उपलब्ध है जोकि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक है। उन्होंने बताया कि राजगढ़ क्षेत्र में किसानों द्वारा ब्रॉकली का उत्पादन करना भी आरंभ कर दिया गया है जिसकी मार्किट में बहुत मांग भी है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में राजगढ़ क्षेत्र में करीब अढ़ाई हजार हेक्टेयर भूमि पर विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन होता है जिसमें टमाटर, शिमला मिर्च, फ्रांसबीन, मटर, अदरक, फूलगोभी, लहसुन, आलू इत्यादि प्रमुख नकदी फसलें शामिल हैं।

त्याग और सादगी के प्रतीक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

आज से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने ऐसे प्रतिभाशाली दार्शनिक राजा की कल्पना की थी जो सभी प्रकार की सुख सुविधाओं का परित्याग करके शुद्ध जनसेवा की भावना से शासन करता है। इसी कल्पना के साकार रूप डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एक ऐसे राजनेता थे, जो राजनीति में अपवादस्वरूप यदाकदा ही प्राप्त होते हैं। वाइसराय के पुराने आवास का, राष्ट्रपति-भवन के रूप में पहली बार भारतीयकरण भी डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद द्वारा ही किया गया। उन्होंने वहां के सभी परदे, नैपकिन और सोफे आदि कीमती विदेशी वस्त्रों को खादी में बदल दिया तथा अपने अंगरक्षक अधिकारियों की वेशभूषा का भी भारतीयकरण करके उन्हें आर्मी कैंप के वस्त्रों के स्थान पर सुन्दर साफे पहना दिये।

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

3 दिसम्बर 1884 को बिहार प्रान्त में सारन जिले के जीरादेई नामक ग्राम में एक मध्यम दर्जे के परिवार में जन्म लेने वाले राजेन्द्र बाबू बचपन से ही प्रतिभाशाली, कर्त्तव्य निष्ठ और लगनशील थे। पहली कक्षा से लेकर वकालत की परीक्षा तक उन्होंने सदैव प्रथम श्रेणी प्राप्त की। कुछ समय तक कॉलेज में अध्यापन कार्य भी किया। फिर वकील बने और उस रूप में भी उन्होंने पर्याप्त सफलता और प्रतिष्ठा प्राप्त की। उनका धन के प्रति कभी कोई मोह नहीं रहा।

1906 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में स्वयंसेवक के रूप में उपस्थित हुए और कालांतर में उसके सिद्धान्तों के साथ जुड़ते चले गये। महात्मा गांधी ने जब चम्पारन (बिहार) में किसानों पर होने वाले अत्याचारों का विरोध किया तथा आन्दोलन चलाया तो राजेन्द्र बाबू उनके प्रमुख सहयोगी थे। 1920 में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो गांधी जी के आह्वान पर डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी वकालत छोड़ दी और आन्दोलन में कूद पड़े। जमा पूंजी के नाम पर उनके पास उस समय केवल 15 रुपए की धनराशि थी। पटना से अहमदाबाद जाना हुआ तो उसके लिए उन्होंने अपना शॉल बेचकर काम चलाया; तभी किराया आदि की व्यवस्था हो सकी। आगे चलकर तो उन्हें अपनी जमीन जायदाद और अपनी पत्नी श्रीमती राजवंशी देवी के गहने भी बेचने पड़े। मगर फिर भी उन्होंने वकालत छोड़कर आन्दोलन में शामिल होने का न तो अपना निर्णय बदला और न परिस्थितियों के आगे झुके।

सन् 1934 में और उसके बाद अनेक बार डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद कांग्रेस-अध्यक्ष बने। संकट की हर घड़ी में उन्हें याद किया गया और हर परीक्षा में वे खरे उतरे। 1946 के अंतरिम मंत्रिमंडल में उन्हें खाद्यमंत्री का पद दिया गया। वे संविधान सभा के अध्यक्ष रहे और 1950 में भारतीय गणतंत्र के अंतरिम राष्ट्रपति बने। मई 1952 में डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद नये संविधान के अन्तर्गत नियमानुसार राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हुए। उसके बाद मई 1957 में उन्हें पुनः इस पद पर प्रतिष्ठित किया गया। 1962 में तीसरी बार पुनः राष्ट्रपति बनने के लिए उनके पास जब प्रस्ताव आया तो उन्होंने साफ मना कर दिया। वे किसी गलत परम्परा को जन्म देना नहीं चाहते थे। उनका विचार था कि देश की सेवा करने के लिए दस वर्ष की अवधि किसी के लिए कम नहीं होती। इसलिए तीसरी बार पुनः राष्ट्रपति के पद के लिए उम्मीदवार बनना गलत परम्परा को जन्म देना होगा।

डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद सही अर्थों में अजातशत्रु थे। उनके राजनीतिक विरोधी भी उन्हें प्रशंसा की दृष्टि से देखते और राजनीतिक दृष्टि से आलोचना करने में भी उन्हें शब्द जुटाने में बड़ी कठिनाई होती। शत्रु तो जीवन पर्यन्त उनका कोई रहा ही नहीं। भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने उनकी सराहना करते हुए लिखा-'बाबू राजेन्द्र प्रसाद के भव्य व्यक्तित्व के बारे में स्वर्ण लेखनी को मधु में डुबोकर लिखना होगा। उनकी असाधारण प्रतिभा, उनके स्वभाव का अनोखा माधुर्य, उनके चरित्र की विशालता और आत्म त्याग के महान गुणों ने उन्हें हमारे सभी नेताओं से अधिक व्यापक और व्यक्तिगत रूप से प्रिय बना दिया है।'

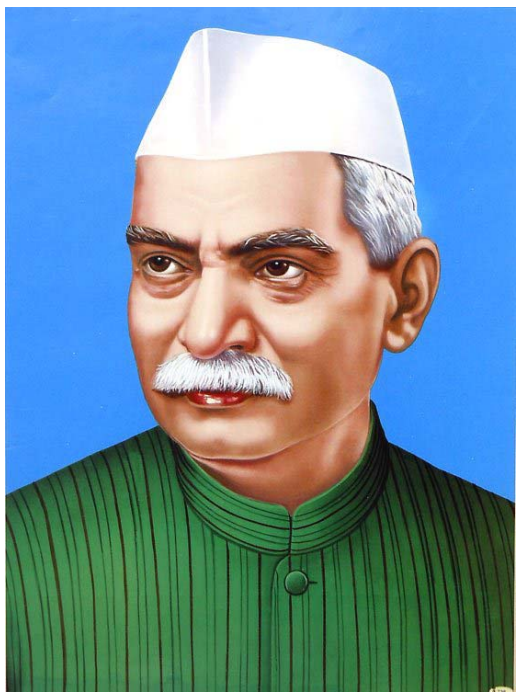

डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद सही अर्थों में अजातशत्रु थे। उनके राजनीतिक विरोधी भी उन्हें प्रशंसा की दृष्टि से देखते और राजनीतिक दृष्टि से आलोचना करने में भी उन्हें शब्द जुटाने में बड़ी कठिनाई होती। शत्रु तो जीवन पर्यन्त उनका कोई रहा ही नहीं। भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने उनकी सराहना करते हुए लिखा-'बाबू राजेन्द्र प्रसाद के भव्य व्यक्तित्व के बारे में स्वर्ण लेखनी को मधु में डुबोकर लिखना होगा। उनकी असाधारण प्रतिभा, उनके स्वभाव का अनोखा माधुर्य, उनके चरित्र की विशालता और आत्मत्याग के महान् गुणों ने उन्हें हमारे सभी नेताओं से अधिक व्यापक और व्यक्तिगत रूप से प्रिय बना दिया है।'

डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद की कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा बेजोड़ थी। उनके लिए देश और समाज सर्वोपरि थे। उन्होंने कभी भी अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को इस रास्ते में बाधा नहीं बनने दिया। 1947 में अपनी पुत्रवधु के दाह संस्कार में वे केवल इसलिए शामिल नहीं हो पाये कि उस समय वे साम्प्रदायिक दंगों के कारण पाटन में थे और उन दंगों को शान्त करने के लिए उनकी उपस्थिति वहां आवश्यक थी। इसी प्रकार 25 जनवरी 1960 की रात्रि को जब उनकी परम सम्माननीया बड़ी बहिन भगवती देवी का देहान्त हो गया तो उनके सामने पुनः परीक्षा की घड़ी उपस्थित हुई। हृदय अत्यधिक शोकाकुल था और उनके नेत्र बार-बार भर आते थे। रात्रि भर वे शव के पास बैठे रहे। प्रातःकाल उन्हें गणतंत्र दिवस पर परेड़ की सलामी लेने के लिए इंडिया गेट जाना था। राष्ट्रीय कर्तव्य था। इसलिए वे निर्धारित समय पर वहां पहुंचे और अपने दायित्व को निभाते हुए कहीं भी, उन्होंने अपनी व्यथा को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का अध्ययनशील व्यक्तित्व था। जब भी समय मिलता, ग्रन्थों में खो जाते। विशेष रुचि थी आध्यात्मिक ग्रंथों में। जो भी पढ़ते, उसका गहराई से ज्ञान प्राप्त करते और उस पर मनन करते। लेखन के क्षेत्र में भी उनका विशिष्ट स्थान था। उनकी पुस्तकें 'चंपारन सत्याग्रह का इतिहास' (1917), 'विभाजित भारत' (1946), 'महात्मा गांधी के चरणों में' (1955) तथा 'आत्मकथा' (1957) साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। पुस्तकों से लाभांश के रूप में उन्हें प्रतिवर्ष लगभग 20-25 हजार रूपए की राशि प्राप्त होती थी, किन्तु उसे वे सदैव सामाजिक और सार्वजनिक कार्यों के लिए दान कर दिया करते थे।

राष्ट्रपति भवन को वे अपने लिए कोई वरदान न मानकर कर्त्तव्यपालन की अनिवार्य शर्त के रूप में स्वीकार करते थे। इसीलिए जब 13 मई 1962 को उन्हें वहां से मुक्ति प्राप्त हुई तो उन्होंने वैसी ही प्रसन्नता व्यक्त की, जैसी एक बालक पाठशाला से छुट्टी मिलने पर करता है। कुछ मामलों में तो उन्हें राष्ट्रपति भवन जेल से भी अधिक कठोर प्रतीत होता था। रामलीला मैदान में आयोजित उनके विदाई समारोह में उन्होंने अपने हृदयस्पर्शी भाषण में कहा था-'जेल जीवन और राष्ट्रपति भवन का जीवन दोनों में एक प्रकार की समानता ही है। अन्तर केवल यह था कि जेल में हम बहुत से लोग के साथ थे और हमारी देखभाल करने वाला केवल एक ही वार्डन था, किन्तु राष्ट्रपति भवन में, मैं अकेला और मेरी देखभाल करने वाले बहुत से लोग थे।'

इसी अवसर पर पं. जवाहर लाल नेहरू ने उन्हें विदाई देते हुए कहा था-'भारतीय गणतंत्र में, ये 12 वर्ष राजेन्द्र-युग के नाम से याद किये जाएंगे।' श्री लाल बहादुर शास्त्री ने भावविह्वल स्वर में कहा-'कभी कभी यह राष्ट्रपति-भवन भी याद किया करेगा कि कोई साधू भी यहां राष्ट्रपति बनकर रहा था।'

राष्ट्रपति पद से अवकाश लेने पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को देश का सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' प्रदान किया गया। इसके केवल नौ माह बाद 28 फरवरी, 1963 को वे देश को रोता बिलखता छोड़ गये।

●)(●

संविधान निर्माता-डॉ. भीम राव अम्बेडकर

जिसने जीवन में कठिन परिस्थितियों का सामना किया हो, वही गरीबों के दर्द को समझ सकता है और उनके उत्थान के लिए कुछ कर सकता है। ऐसे ही महापुरुष थे डॉ. भीम राव अम्बेडकर।

डॉ. अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्य प्रदेश के मऊ नामक छोटे से गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता का नाम भीमाबाई था। वे महार जाति से सम्बन्ध रखते थे। डॉ. अम्बेडकर अपने माता-पिता की आखिरी संतान थी। इनका बचपन का नाम रामजी सकपाल था। महार जाति में पैदा होने के कारण लोग इन्हें अछूत और बेहद निचला वर्ग का मानते थे और इनके परिवार के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था।

डॉ. अम्बेडकर के पिता हमेशा ही अपने बच्चों की शिक्षा पर जोर देते थे। सेना में होने के कारण उन्होंने भीमराव का दाखिला एक सरकारी स्कूल में करवा दिया। छोटी जाति का होने पर स्कूल में भी इनसे भेदभाव किया जाता था। इन्हें सभी बच्चों से अलग बिठाया जाता था। लेकिन भीमराव ने हार नहीं मानी और कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपनी पढ़ाई जारी रखी। 1894 में अम्बेडकर के पिता सेवानिवृत हुए और इसके दो साल बाद मां की भी मृत्यु हो गई। मां की मृत्यु के बाद रामजी सकपाल के बच्चों की देखभाल उनकी चाची ने की। अपने भाइयों और बहनों में केवल अम्बेडकर ही स्कूल की परीक्षा में सफल हुए और इसके बाद बड़े स्कूल जाने में सफल हुए। उनके एक शिक्षक महादेव अम्बेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे, के कहने पर भीम राव ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अम्बेडकर जोड़ लिया जो उनके गांव के नाम 'अम्बावडे' पर आधारित था।

हाई स्कूल में भीम राव अम्बेडकर के अच्छे प्रदर्शन के बावजूद भी उनके साथ जातिवादी भेदभाव बेहद आम था। सन् 1907 में भीम राव ने मैट्रिक की परीक्षा पास की और बंबई विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। इस तरह वे कॉलेज में प्रवेश लेने वाले भारत के पहले अस्पृश्य बन गए। उनकी इस सफलता से उनके पूरे समाज में खुशी की लहर दौड़ गई। समाज के सामने भीम राव ने एक आदर्श पेश किया था।

सन् 1908 में भीम राव ने ऐलिफिस्टोन कॉलेज में प्रवेश लिया और बड़ोदा के गायकवाड़ शासक से संयुक्त राज्य अमेरिका में उच्च अध्ययन के लिए पच्चीस रुपये प्रतिमाह का वजीफा प्राप्त किया। सन् 1922 में इन्होंने राजनीतिक विज्ञान और अर्थ शास्त्र में डिग्री प्राप्त की और बड़ौदा राज्य सरकार में नौकरी करने को तैयार हो गए। बड़ौदा राज्य के सेना सचिव के रूप में काम करते हुए अपने जीवन में अचानक आए भेदभाव से अम्बेडकर उदास हो गए और अपनी नौकरी छोड़कर निजी ट्यूटर और लेखाकार के रूप में काम करने लगे।

अम्बेडकर के जीवन में भेदभाव तो बहुत आम था लेकिन साउथ बोरोह समिति के समक्ष दलितों की तरफ से अंग्रेजों के सामने उनकी पेशी ने उनके जीवन को बदलकर रख दिया। भारत सरकार अधिनियम, 1919 पर चर्चा करने के अंग्रेजी हुकूमत ने अम्बेडकर को बुलाया था।

स्मरण/खेम चन्द कश्यप

15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्रता के बाद जब पहली सरकार अस्तित्व में आई तो डॉ. अम्बेडकर को देश के पहले कानून मंत्री के रूप में देश सेवा करने के लिए आमंत्रित किया गया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। 29 अगस्त, 1947 को डॉ. अम्बेडकर को स्वतन्त्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

सन् 1925 में अम्बेडकर को बॉम्बे प्रेसीडेंसी समिति में सभी यूरोपीय सदस्यों वाले साइमन आयोग में काम करने के लिए नियुक्त किया गया। कल तक एक अछूत माने जाने वाले अम्बेडकर कुछ ही समय में देश की चर्चित हस्ती बन गए। उन्होंने मुख्य धारा के महत्वपूर्ण राजनीतिक दलों की जाति व्यवस्था के उन्मूलन के प्रति उनकी कथित उदासीनता की कटु आलोचना की।

डॉ. अम्बेडकर ब्रिटिश शासन की विफलताओं से भी असंतुष्ट थे। उन्होंने अस्पृश्य समुदाय के लिए एक ऐसी अलग राजनैतिक पहचान की वकालत की जिसमें कांग्रेस और ब्रिटिश दोनों का ही कोई दखल न हो। 8 अगस्त, 1930 को एक शोषित वर्ग के सम्मेलन के दौरान डॉ. अम्बेडकर ने अपनी राजनीतिक दृष्टि को दुनिया के सामने रखा जिसके अनुसार शोषित वर्ग की सुरक्षा उसकी सरकार और कांग्रेस दोनों से स्वतन्त्र होने में है।

सन् 1936 में डॉ. अम्बेडकर ने स्वतन्त्र लेबर पार्टी की स्थापना की जिसने सन् 1937 में केन्द्रीय विधान सभा चुनावों में 15 सीटें जीतीं। डॉ. अम्बेडकर एक कुशल लेखक भी थे। उन्होंने समाज पर चोट करती कई पुस्तकें लिखीं जिनमें 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान', 'वॉट कांग्रेस एंड गांधी हैव डन टू द अनटचेबल्स' प्रमुख है।

अपने बेबाक विचारों के बावजूद अम्बेडकर की प्रतिष्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेता की थी। 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्रता के बाद जब पहली सरकार अस्तित्व में आई तो डॉ. अम्बेडकर को देश के पहले कानून मंत्री के रूप में देश सेवा करने के लिए आमंत्रित किया गया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया गया। 29 अगस्त, 1947 को डॉ. अम्बेडकर को स्वतन्त्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

डॉ. अम्बेडकर द्वारा तैयार किए गए संविधान में संवैधानिक गारंटी के साथ नागरिक स्वतन्त्रता की सुरक्षा प्रदान की जिनमें धार्मिक स्वतन्त्रता, अस्पृश्यता का अंत और सभी प्रकार के भेदभावों को गैर कानूनी करार दिया गया। डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की वकालत की और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सिविल सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों की नौकरियों में आरक्षण प्रणाली शुरू करने के लिए सभी का समर्थन भी हासिल किया। 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अपना लिया गया।

14 अक्तूबर, 1956 को नागपुर में डॉ. अम्बेडकर ने स्वयं और अपने समर्थकों के लिए एक औपचारिक सार्वजनिक समारोह का आयोजन किया जिसमें उन्होंने एक बौद्ध भिक्षु से पारम्परिक तरीके से तीन रत्न प्राप्त कर पंचशील अपनाते हुए बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

डॉ. अम्बेडकर मधुमेह से पीड़ित थे। वे सन् 1954 में नैदानिक अवसाद और दृष्टि दोष से ग्रसित हो गए। 6 दिसम्बर, 1956 को उनकी लम्बी बीमारी के बाद मृत्यु हो गई।

व्यर्थ नहीं गया रानी का बलिदान

पृथ्वी का 71 प्रतिशत भाग पानी से भरा है फिर भी पानी की समस्या दिन व दिन बढ़ती जा रही है। पानी की किल्लत आज भी है और सैंकड़ों वर्ष पूर्व भी थी। लोगों को पानी सुलभ करवाना जहां आज सरकार का कर्तव्य है वहीं पुराने समय में प्रजा के हितार्थ पानी की समुचित व्यवस्था करना राजा के लिए चुनौती हुआ करती थी। अपनी प्रजा के लिए राजा बड़े से बड़ा त्याग करने को सदैव तत्पर रहता था।

उन दिनों आज की तरह ड्रिलिंग मशीनें नहीं हुआ करती थीं जिनसे गहराई से पानी ऊपर लाया जा सके। पूरी कोशिश करने पर भी पानी नदी से ऊपर न उठे तब राजपुरोहित, ज्योतिषियों तथा कुलदेवी से पानी की समस्या दूर करने के लिए सहायता ली जाती थी। ऐसे में परिवार के किसी सदस्य का बलिदान भी करना पड़े तो प्रजा के लिए राजा हृदय पर पत्थर रखकर करता था। जिला कांगड़ा की रानी ने पानी के लिए आत्मोत्सर्ग किया था। उनका नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। प्रजा के लिए इतना बड़ा बलिदान निश्चय ही बहादुरी की ऐसी मिसाल है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

जिला कांगड़ा के मुख्यालय धर्मशाला से दस किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा में एक गांव है चड़ी। बहुत वर्ष पहले इस गांव में राजा जसपत राणा का राज था। वह धार्मिक प्रवृति और प्रजा का हितैषी था। प्रजा राजा को भगवान समान मानती थी। चड़ी गांव के साथ गज नाम का दरिया बहता है। राजा इस दरिया का पानी गांव के खेतों की सिंचाई के लिए प्रयोग करना चाहता था। पानी के बिना खेत सूखे पड़े थे। प्रजा अन्न की कमी से दुखी थी। राजा प्रजा के दुख से परेशान था।

राजा ने इस दरिया में पानी ऊपर उठाने के लिए सैंकड़ो मिस्त्री, मजदूर लगाकर एक दीवार खड़ी करनी चाही जिससे पानी जमा होकर नाली द्वारा खेतों तक पहुंचे। पर दस महीनों की अथक मेहनत के बाद भी पानी ऊपर न आया। मिस्त्री, मजदूरों ने हाथ खड़े कर काम छोड़ दिया। पानी खेतों तक न पहुंचने से राजा चिन्तित रहने लगा। उसकी भूख-प्यास, नींद समाप्त हो गई।

अशोक सरीन

आज रुकमणि रानी नहीं है पर गांव के घर-घर से बहती पानी की कूहल रानी के त्याग का स्मरण करवाती है। गांववासियों ने रानी रुकमणि के बलिदान स्थल पर दीवार बना दी है। लोग इस दीवार को रानी के बलिदान का प्रतीक मानकर पूजा करते हैं।

एक रात कुल देवी ने राजा को दर्शन देकर कहा, राजा उदास मत हो। नदी से पानी कूहल से जरूर चढ़ेगा। कुल देवी की बात सुन राजा को बड़ी राहत मिली। राजा ने अपने कुल पुरोहित को जन्मपत्री दिखाकर उससे पूछा, 'पुरोहित जी नदी से पानी ऊपर क्यों नहीं उठ रहा है ?'

पुरोहित ने राजा को बताया, 'नदी से पानी तभी ऊपर आ सकता है यदि आप बलिदान देने का प्रबन्ध करें।'

बलि का नाम सुन राजा सोच में डूब गया। पुरोहित ने कहा, 'आप झाड़ू, अपने घोड़े या पोते-बहू किसी की भी बलि दें तो पानी गांव के खेतों में बहने लगेगा।'

राजा के लिए चार विकल्प थे। झाड़ू घर की लक्ष्मी है। घोड़ा मूक जानवर है। पोता बड़ा होने पर राज गद्दी का अधिकारी बनेगा। राजा अपनी बहू रुकमणि का बलिदान देने को तैयार हो गया। उन दिनों बहू अपने मायके गई हुई थी। राजा ने उसे बुलाकर पानी के बारे में बताकर उसे बलि देने के लिए तैयार किया। रुकमणि अपने दूध पीते नन्हें बच्चे की ममता त्यागकर पानी के लिए भरी जवानी में बलिदान देने को तैयार हो गई। निश्चित दिन रानी रुकमणि दुल्हन का श्रृंगार कर डोली में बैठ बलि स्थल की ओर रवाना हुई। रानी के पीछे राजा जसपत अपने पोते को उठाए प्रजा के साथ रोते-रोते चल रहा था।

पूजा-पाठ के बाद रानी को जिंदा चिनवा दिया गया। इसके साथ ही चमत्कार हुआ। नदी का जल ऊपर उठने लगा और गांव के खेतों में बहने लगा। उधर रुकमणि के भाइयों को बहिन के बलिदान का पता चला तो वे आगबबूला हो उठे। उन्होंने अपनी सेना के साथ चड़ी गांव पर चढ़ाई कर दी। खून की नदियां बह गई। उन्होंने दीवार तोड़कर बहन रुकमणि का दाह संस्कार किया। आज रुकमणि रानी नहीं है पर गांव के घर-घर से बहती पानी की कूहल रानी के त्याग का स्मरण करवाती है। गांववासियों ने रानी रुकमणि के बलिदान स्थल पर दीवार बना दी है। लोग इस दीवार को रानी के बलिदान का प्रतीक मानकर पूजा करते हैं। चैत्र मास में जाति विशेष के लोग ढोलक पर 'रुहला दी कूहल' गीत गाकर रानी के बलिदान का गुणगान करते हैं। यह घटना कांगड़ा गजेटियर 1904 में दर्ज है।

पुरातन परम्परा को संजोये : बूढ़ी दिवाली

हिमाचल प्रदेश के त्योहार अन्य राज्यों से अलग हैं। हिमाचल प्रदेश के त्योहार धर्म, व्यापार, मौसम और खेल से जुड़े हैं। हर उत्सव के उद्घाटन के साथ बहुत कुछ परंपरा जुड़ी हुई है। इस राज्य के लोग सभी त्योहारों में समान उत्साह और पारंपरिक उत्साह के साथ भाग लेते हैं। इस राज्य में अधिकांश त्योहार विभिन्न मौसमी परिवर्तनों के साथ निकट संबंध में हैं। इस राज्य का प्रत्येक जिला अपने अलग-अलग त्योहारों में शामिल होता है, जो उस क्षेत्र की ऐतिहासिक और समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि से जुड़े होते हैं। इन सब त्योहारों में दीवाली सबसे बड़ा है।

जीवन धीमान

बूढ़ी दीवाली प्रदेश के सिरमौर जिले में बड़ी धूम धाम से मनाई जाती है। गिरिपार क्षेत्र में मुख्य दीवाली भी धूमधाम से मनाई जाती है, लेकिन बूढ़ी दीवाली को लेकर लोगों में एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है। गिरिपार के हर एक गांव में लोग बूढ़ी दीवाली को अपने-अपने रीति- रिवाजों के अनुसार मनाते हैं। ऐसे में कहा जा सकता है कि आधुनिकता के दौर में सिरमौर जिला का गिरिपार क्षेत्र अपनी प्राचीन परंपराओं को बखूबी संजोए हुए है। इन परंपराओं के निर्वहन से लोगों में आपसी भाईचारे के साथ-साथ सहयोग की भावना भी देखने को मिलती है। इन परंपराओं को संजोए रखने से देवभूमि हिमाचल की पुरानी संस्कृति के संरक्षण को भी बल मिलता है।

बूढ़ी दीवाली के अवसर पर ग्रामीण अपनी बेटियों और बहनों को खासतौर पर आमंत्रित करते हैं। इस दिन ग्रामीण पारंपरिक व्यंजन बनाते हैं और सूखे व्यंजन मूड़ा, चिड़वा, शाकुली और अखरोट बांट कर त्योहार की शुभकामनाएं देते हैं। इसी दौरान स्थानीय लोग लिंबर नृत्य के साथ मशाल यात्रा निकालते हैं और कुछ गांव में हारूल गीतों की ताल पर बढ़ेचू और बुड़ियात नृत्य कर देव परंपरा निभाई जाती है। बूढ़ी दिवाली गिरिपार क्षेत्र की 125 पंचायतों में हर साल हर्षोल्लास और पारंपरिक तरीके से मनाई जाती है। आधी रात को हाथों में मशाल लेकर इस महापर्व का आगाज किया जाता है और ये पर्व एक हफ्ते तक जारी रहता है।

मान्यता है कि गिरिपार में भगवान राम के अयोध्या पहुंचने की खबर एक महीना देरी से मिली थी। इस कारण यहां एक महीने बाद दीवाली की परंपरा का निर्वहन करते हैं। बूढ़ी दीवाली के दिन शनैचरी अमावस्या होने से इस पर्व का महत्व और बढ़ जाता है।

पांडव वंशज के लोगों का विश्वास है कि अमावस्या की रात को मशाल जुलूस निकालने से क्षेत्र में नकारात्मक शक्तियों का प्रवेश नहीं होता और गांव में समृद्धि के द्वार खुलते हैं। कौरव वंशज के लोग अमावस्या की आधी रात को पूरे गांव में मशाल के साथ परिक्रमा कर एक भव्य जुलूस निकालते हैं और गांव के सामूहिक स्थल पर बलिराज दहन की परंपरा निभाते हैं।

गिरिपार क्षेत्र में मुख्य दीवाली भी धूमधाम से मनाई जाती है, लेकिन बूढ़ी दीवाली को लेकर लोगों में एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है। गिरिपार के हर एक गांव में लोग बूढ़ी दीवाली को अपने-अपने रीति-रिवाजों के अनुसार मनाते हैं।

ऐसे में कहा जा सकता है कि आधुनिकता के दौर में सिरमौर जिला का गिरिपार क्षेत्र अपनी प्राचीन परंपराओं को बखूबी संजोए हुए है। इन परंपराओं के निर्वहन से लोगों में आपसी भाईचारे के साथ-साथ सहयोग की भावना भी देखने को मिलती है। इन परंपराओं को संजोए रखने से देवभूमि हिमाचल की पुरानी संस्कृति के संरक्षण को भी बल मिलता है।

पहाड़ की लोक संस्कृति की धड़कन-वाद्य यंत्र

हिमाचल प्रदेश के वाद्य यंत्र यहां की लोक धड़कन हैं। इनका स्वर ताल फूटते ही लोकमन आह्लाद से भर उठता है। पहाड़ के निवासियों का कोई भी मंगल कार्य, पर्व, मेला अथवा त्यौहार इन वाद्य यंत्रों के बिना अधूरा होता है। आज धीरे-धीरे पश्चिमी सभ्यता से रंगे ऊल-जलूल के संगीत ने अवश्य ही परम्परागत लोक वाद्यों को ठेस पहुंचाई है, परन्तु पहाड़ी जनजीवन में इनकी इतनी गहरी पैठ है कि इनका महत्व किसी भी दृष्टि से कम होने की कोई सम्भावना नहीं है। आज के बदलते दौर में लोग बैंड-बाजों से लेकर डीजे को अपनी जिंदगी में शामिल कर चुके हैं। बावजूद इसके देवभूमि हिमाचल में बजाये जाने वाले पारंपरिक देव वाद्य यंत्रों का महत्व आज भी ज्यों का त्यों ही बना हुआ है। आज की युवा पीढ़ी भी इन वाद्य यंत्रों को बजाने में खासी दिलचस्पी दिखाती है। यही कारण है कि सदियों से चली आ रही यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती जा रही है।

हिमाचल प्रदेश में बजाए जाने वाले पारंपरिक वाद्य यंत्रों से निकलने वाली धुनें आज भी उतनी ही सुरीली हैं, जितनी सदियों पहले हुआ करती थीं। हिमाचल में देव वाद्य यंत्रों का अपना एक अलग महत्व है। यहां के देवी-देवता इन वाद्य यंत्रों के बिना नहीं चलते। देवरथ को मंदिर से निकालना हो, कहीं ले जाना हो या फिर दोबारा मंदिर में रखना हो तो इन वाद्य यंत्रों को बजाये बिना यह काम नहीं किया जाता। ढोल-नगाड़ों की थाप और करनाल की ध्वनि के बिना देवयात्रा शुरू ही नहीं होती। आधुनिक युग में कई ऐसी प्राचीन कलाएं हैं जो समय के साथ विलुप्त हो चुकी हैं, लेकिन देव वाद्य यंत्रों को बजाने की यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती जा रही है। अधिकतर ऐसे बजंतरी भी हैं जिन्हें देव वाद्य यंत्र बजाते-बजाते कई दशक बीत चुके हैं और आज भी वे उसी जोश और उत्साह के साथ इन वाद्य यंत्रों को बजाते हैं।

देवी-देवताओं के वाद्य यंत्रों में मुख्य रूप से शहनाई, कांसे की थाली, ढोल, नगाड़ा, करनाल और रणसिंघा शामिल होते हैं। लेकिन इनमें ढोल, नगाड़ा और करनाल सबसे प्रमुख है। यह तीन वाद्य यंत्र हमेशा देवी-देवताओं के साथ नजर आएंगे। देव समाज में इन वाद्य यंत्रों को बजाने वालों का भी अहम स्थान है। देवरथ की यात्रा में सबसे आगे यही बजंतरी चलते हैं और उसके बाद ही देवरथ चलता है। शासन और प्रशासन भी इन बजंतरियों के मान सम्मान में कोई कसर नहीं छोड़ता।

मंडी में हर वर्ष मनाए जाने वाले अंतराष्ट्रीय शिवरात्रि महोत्सव में बजंतरियों के लिए एक प्रतियोगिता करवाई जाती है, जिसमें बजंतरी अपनी कला के जौहर दिखाते हैं। वहीं बजंतरियों को हर वर्ष महोत्सव के दौरान मानदेय भी दिया जाता है। इससे पता चलता है कि शासन और प्रशासन भी इस कला को सहेजे रखने में अपना अहम योगदान दे रहा है। शादी समारोहों में इन वाद्य यंत्रों को बजाने की परंपरा आज भी कायम है। हिमाचल की घाटियों में लोक वादक या बजंतरी अपने परंपरागत लोक वाद्यों और वस्त्र आभूषणों के साथ जब उत्सवों में सम्मिलित होते हैं तो हिमाचल की संस्कृति को अनूठी पहचान मिलती है।

प्रवीण कुमार

देव नृत्य हो या नाटी, बजंतरी यानी वाद्य बजाने वाले तो चाहिए ही। ये बजंतरी 'बाजगी' भी कहलाते हैं। अलग-अलग, साज-बाज बजाने वाले अलग-अलग नामों से जाने जाते हैं। करनाल बजाने वाला 'करनाचली', शहनाई बजाने वाला 'सनाईतड़' या 'हेसी', ढोल बजाने वाला 'ढोली' आदि। अलग-अलग भागों में नामों में भिन्नता हो सकती है, मगर साज-बाज लगभग एक से ही हैं। हिमाचल में जिन वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है उसमें प्रमुख है- शहनाई (सुंदरी), बांसुरी, करनाल, रणसिंघा, नगाड़े, ढोल, टमक, दमदमा, खंजरी, खंबा, तुंबा (एकतारा), वीणा, किन्नरी, पौहल (तुरही), बुगजाल, रुबाना आदि। यहां ढोल, ढोलकू, ढोलकी, नगाड़ा, ढमामा, ढमंगूट, गुज्जू, डौरू, हुडक, घौसा, नगारट आदि अनेक प्रकार के ढोल मिलते हैं। घन वाद्य यंत्रों में झांझ, मजीरा, घडियाल, घुंघरू, चिमटा, खड़ताल, मुरचंग, थाली आदि जिनका उपयोग भजन-कीर्तन, जगराता, भगत, करयाला आदि लोक नाट्यों में होता हैं। ऐंचली गायन में थाली को घड़े पर रखकर लोहे के कंगन से विशेष रूप से बजाया जाता है।

चंबा जिला की चुराह घाटियों में घुरई, खंजरी, रोमान जैसे वाद्य यंत्र हैं। लाहुल-स्पीति व किन्नौर की घाटियों में रुबाव, जुमड़, ग्राम्यड़ आदि वाद्य यंत्र बजाए जाते हैं। मंडी में व शिमला जिले के लोकवादक सूरजमणि व प्रीतमदास 'शहनाई' से मिलता-जुलता लोकवाद्य यंत्र पीपणी इतनी दक्षता से बजाते हैं कि किसी भी सुर को साध लें। वहीं गीत व नाट्यों में आनंदित कर देने वाली बांसुरी का कोई पर्याय नहीं। 'रणसिंघे' की अपनी ही शान है। प्राचीनकाल में रणसिंघा युद्ध क्षेत्र में अपने संकेत के लिए प्रसिद्ध था। 'करनाल' को बजाने की भी विशेष कला है। दोनों ही वाद्य यंत्र आह्लादकारी स्वर में जोड़े में बजाए जाते हैं। देवताओं के मंदिर व देवयात्राओं के दौरान करनाल की तरह ही 'काहल' वाद्य यंत्र बजाया जाता है। लाहुल में काहल को 'भोटू काहल' कहते हैं।

उसी तरह 'भाणा' एक ऐसा वाद्य यंत्र है, जो कांसे से बनता है, इसे कई जगह 'थाली' भी कहा जाता है। 'झांझ' कांसे की होती है। दो झांझों को टकराने से निकलने वाली झंकार वातावरण को सुरमयी बना देती है। मंजीरे व खड़ताल के बिना भी लोकवाद्य यंत्र अधूरे हैं। 'नगाड़ा' एक मुख्य वाद्य यंत्र है। नगाड़े को लकड़ियों से बजाया जाता है। नगाड़े के साथ ढोल का स्वर, ताल और लय आवश्यक है। नगाड़े का कोई विकल्प नहीं फिर भी ढोल के बिना नगाड़े का स्वर नहीं बन पाता। ग्राम्यड़, रुबाव, जुमड़ लाहुल तथा किन्नौर जनजातीय संगीत के तार-वाद्य हैं। चंबा-चुराह घाटियों का लोक गायक खंजरी, घुरई से सुर, ताल व गीत की जो रसमयी फुहार बिखेरता है वो मनोहरी छटा ही कुछ और होती है।

वर्तमान समय में पीढ़ी दर पीढ़ी इस व्यवसाय से जुड़े कुशल वादक अब कम होते जा रहे हैं। लोगों का रहन सहन, मनोरंजन के तरीके बदल रहे हैं। ऐसे में हमारी संस्कृति इतिहास न हो जाए, इसलिए इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को नीति बनाकर संरक्षण और प्रोत्साहन देने की जरूरत है।

▲▲▲

पुस्तक समीक्षा

एक ऐतिहासिक प्रसंग की अभिव्यक्ति है 'मोरां मेरी जान'

एक ही समय में संवेदनशील कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, आलोचक, शोधार्थी तथा अनुवादक होने के अलावा शब्दकोश, बाल साहित्य एवं साक्षात्कार जैसे तमाम क्षेत्रों में समान अधिकार रखने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा. धर्मपाल साहिल ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में कुशलतापूर्वक सृजन किया है। हाल ही में उन्होंने नाटक विधा में प्रवेश करते हुए महाराजा रणजीत सिंह के जीवन के उस पक्ष को उघाडने का सफल प्रयास किया है, जिस पर अधिकतर इतिहासकारों ने मौन रहना ही बेहतर समझा है। अनारकली को लेकर भले ही इतिहास में कोई जिक्र नहीं मिलता, लेकिन यह मशहूर नाटककार इम्तियाज अली ताज का ही कमाल था जिन्होंने अनारकली के चरित्र को आम भारतीय मानस में इस तरह से रच दिया कि लोग असली तारीख़ को भुलाकर नाटक को ही वास्तविक मानने लगे। जब के. आसिफ ने 'मुगले आजम' फिल्म बनाई तो अनारकली देश की धडकन हो गई। लेकिन मोरां काल्पनिक नहीं, वास्तविक चरित्र है। जब चरित्र वास्तविक है तो न्याय भी मुकम्मल होना चाहिए और डॉ. साहिल अपनी इस कोशिश में कामयाब रहे हैं।

पाँच दरियाओं की भूमि पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह का नाम आदर से लिया जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह एक पराक्रमी योद्धा एवँ कुशल राज्य प्रबंधक थे, लेकिन सार्वजनिक जीवन के साथ-साथ उनका अपना निजी जीवन भी था। फौलाद की तरह नजर आने वाले महाराजा के सीने में धडकता नाजुक दिल भी था, जो लाहौर विजय के बाद मोरां को देखते ही अपना आपा खो बैठता है। नाटककार ने बड़ी ही कुशलता के साथ महाराजा की उज्ज्वल छवि को बेदाग रखते हुए उनकी मानवीय जरूरतों और कमजोरियों को पाठकों के सामने बखूबी उभारा है। नाटक में महाराजा रणजीत सिंह के अनिद्य सुन्दरी तथा नर्तकी मोरां के प्रति एकतरफा प्रेम प्रसंग को रुमानियत से लबरेज संवादों द्वारा महाराजा की मनोवस्था को उभारा गया है।

नाटक एक ओर महाराजा के कथन 'मेरे लिए एक औरत का दिल जीतने की अपेक्षा, 'लाहौर जीतना आसान था' महाराजा की इस सोच का परिचायक है कि 'मोरां' को बलपूर्वक नहीं बल्कि उसका हृदय सम्राट बन कर जीता जा सकता है। एक अन्य स्थल पर महाराजा का कथन कि 'तवायफ भी तो एक औरत होती है, तवायफ वह अपनी मर्जी से नहीं बनती। उसके हृदय में भी एक औरत के ख्वाब होते हैं। वह किसी की पत्नी बन कर अपना मुस्तिकबल महफूज कर ले। उसका हृदय भी किसी के प्यार के लिए धडकता है।' ये पंक्तियां महाराजा के औरत के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को उजागर करती हैं। दूसरी ओर मोरां की माँ जुबैदा की मानसिक पीड़ा, चतुराई, दूरदर्शिता तथा अपनी बेटी के सुरक्षित भविष्य के प्रति सजगता हर युग की माँ की मनोवृति को पाठकों के सामने लाती है।

'तवायफ भी तो एक औरत होती है, तवायफ वह अपनी मर्जी से नहीं बनती। उसके हृदय में भी एक औरत के ख्वाब होते हैं। वह किसी की पत्नी बन कर अपना मुस्तिकबल महफूज कर ले। उसका हृदय भी किसी के प्यार के लिए धडकता है।'

लेखक की रचनात्मक विशेषता इस बात में भी है कि उन्होंने उस नाजुक वक्त की दशा तथा दिशा को ध्यान में रखते हुए महाराजा का अपने विश्वासपात्र और वफादार सहायक लहना सिंह के साथ जो वार्तालाप प्रस्तुत किया है, वह पाठकों को सहज ही अपने ओर खींचता है। एक महानायक की मनोदशा तथा मनोविज्ञान को पूरी शालीनता तथा व्यग्रता के साथ इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि वह कहीं भी नाटकीय नहीं लगता। नाटककार ने अपनी कल्पनाशीलता को ऊँचाई प्रदान करते हुए महाराजा-मोरां-जुबैदा-लहना सिंह आदि पात्रों के सम्बन्धों को डोर में इस प्रकार बाँधा है कि वह मौजूदा यथार्थ से टकराती प्रतीत होती है। नाटक में लेखक द्वारा उपयुक्त स्थानों पर उर्दू के शे'अरों का इस्तेमाल जहां नाटक को काव्यात्मकता प्रदान करता है, वहीं उसमें रोमांस पैदा कर गतिशीलता को बढ़ाता है। लेखक द्वारा उर्दू, हिन्दी, फारसी, पंजाबी तथा आंचलिक शब्दों का सटीक प्रयोग भी नाटक को प्रभावशाली बनाता है। ये शब्द नाटक के माध्यम से धरोहर स्वरूप संभाले गये हैं। ये सभी प्रयोग नाटक को नया आयाम स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

सशक्त पटकथा, चुस्त संवाद, उपयुक्त वातावरण, पात्र चयन, काव्यात्मक मुहावरा तथा नाटकीयता अंश 'मोरां मेरी जान' नाटक को सफल नाटकों की कतार में ला खड़ा करते हैं। मंचन की दृष्टि से नाटक में वे सभी तत्त्व मौजूद है जो सफल मंचन हेतु अपेक्षित होते हैं। पाठकों की भांति यह नाटक अपने दर्शकों को भी बांधने में सफल रहेगा। 'मोरां मेरी जान' पंजाबी संस्कृति की कई सशक्त परम्पराओं पर पहरा देकर नई पीढ़ी को उसकी महत्ता से अवगत कराता है। इतिहास के अनछुए प्रसंग को अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से नाटक विधा द्वारा जीवन्तता प्रदान करना डॉ. धर्मपाल साहिल की उपलब्धि कही जा सकती है।

कुल 72 पृष्ठों वाली इस पुस्तक का मूल्य 150 रुपये हैं, जिसे प्रीत साहित्य सदन, समराला चौक, लुधियाना द्वारा प्रकाशित किया गया है। रोचक ऐतिहासिक घटना पर आधारित यह नाट्य रचना संग्रह के काबिल है।

पुस्तक- मोरां मेरी जान (नाटक)
लेखक- डॉ. धर्मपाल साहिल
प्रकाशक- प्रीत साहित्य सदन (रजि.), लुधियाना (पंजाब)
पृष्ठ-72, मूल्य-150

✍ अजय पाराशर

ग़ज़ल

समंदर से प्यास लेकर लौटा हूं।
चमन से दिल उदास लेकर लौटा हूं।

जहां से बिलकुल ही करीब था किनारा,
वहां से आस-बेआस लेकर लौटा हूं।

लिखे थे जो बड़े ही खुलूस से तुझे,
उन खतों की राख लेकर लौटा हूं।

सुना था लोग दिल लेकर भूल जाते हैं,
ऐसा ही एक अहसास लेकर लौटा हूं।

बड़ा ही प्यार था जिन चेहरों से मुझे,
उन्हीं से मन निराश लेकर लौटा हूं।

मैं तो गया था वहां मिलने उन्हें प्यार से,
मगर कभी न मिलने का वनवास लेकर लौटा हूं।

जिन्हें देखने के लिए दिल बेताब रहता था,
'राज' उन्हीं से नफ़रत की सौगात लेकर लौटा हूं।

✍ राजकुमार सकोलिया

लघुकहानी

'कालू बदल गया'

एक गाँव में कालू नामक आदमी रहता था। वह बहुत गरीब था। मजदूरी करके जीवन यापन करता। परिवार को दो वक्त की रोटी बड़ी मुश्किल से जुटा पाता था। एक दिन उसे किसी ने सलाह दी कि गाय पालो और दूध बेचने का काम करो। उसे भी यह काम पसंद आया। बहाने से गौ माता की सेवा भी हो जाएगी उसने सोचा।

गाय खरीद लाया और खूब मन लगाकर पति-पत्नी गाय की सेवा करने लगे। गाय का दूध बेचने अब वह शहर जाने लगा। सुबह चार बजे दूध लेकर शहर को चला जाता। अपनी आमदनी बढ़ने पर वह बहुत प्रसन्न रहने लगा। गाय ने कुछ महीनों बाद बछिया को जन्म दिया। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे गौशाला खोलने की सूझी। दो-चार गाय किसी और से खरीद लाया। उसे दूध बेचने में खूब मुनाफा सूझ रहा था। गोबर खेतों में खाद के काम आता। देखते ही देखते उसके खेत भी सोना उगलने लगे। उसकी पत्नी मीरा तो बहुत खुश थी। एक दिन एक गाय ने बछिया की जगह बछड़े को जन्म दिया। वे बहुत दुःखी हुए। उन दोनों ने सोचा अब तो बैल हल जोतने के काम भी नहीं आते। ट्रक्टर से ही खेत जुतबा लेते हैं। कालू पत्नी से बोला, 'क्यूं न सुबह जल्दी जा बछड़े को साथ लेकर शहर में ही छोड़ दूं।' उसने ऐसा ही किया। कुछ दिनों बाद पुनः गाए ने बछड़े को ही जन्म दिया। दोनों बेहद दुःखी हो गए। जो गाय की सेवा में ही लगे रहते थे वही अब उन्हें मारने और गालियां देने लग पड़े। बछिया न देनी तो तुम्हारा क्या करना ऐसा कहते। मनुष्य के स्वभाव में इस तरह परिवर्तन आना शर्मनाक है। कालू पत्नी से बोला जिस तरह उस बैल बच्चे को शहर छोड़ा था इसे भी ऐसे ही छोड़ूंगा। अगली सुबह उसने चुपचाप उसे भी शहर छोड़ दिया। कुछ समय बाद यह सिलसिला इसी तरह चलता रहा। किसी को भी खबर नहीं लग पाती। साल बाद शहर की लंबी गली में आठ-दस बैल सड़क पर घूमने लगे। कभी कूड़ा खाते तो कभी मार। एक-दो साल बाद वे ताकतवर बन गए। खाना न मिलने पर बहुत परेशान होते। कभी सब्जी मंडी के चक्कर लगाते तो कभी लोगों के खेतों में पेट भरने का जुगाड़ करते। उन्हें अब पीटा भी जाता था।

कालू के ऊपर न जाने कैसा ग्रह था कि उसकी सभी गाय बछड़े को ही जन्म देतीं। अब उसकी पत्नी भी परेशान हो गई उससे बोली यह गौपालन बंद कर देते हैं। उधर भूखे बैल हर किसी को मारने पड़ रहे थे।

मानव हम जानवरों को तंग करते कभी नहीं सोचते और हम कुछ करें तो हाय तौबा मचा देते हैं। क्या जीने का अधिकार इन्हें ही है??? अपना फायदा हो तो ठीक नहीं तो किसी पर दया नहीं दिखाते। ईश्वर इन्हें रास्ता दिखा।

अगली सुबह सड़क के किनारे खड़े दो बैल रंभा-रंभाकर अपने साथियों को बुला रहे थे। कुछ ही क्षणों में बैलों का जमावड़ा लग गया। सड़क पर जा रहे वाहनों को परेशानी हो गई। कोई हार्न बजाकर बैलों को हटाने का प्रयास करता तो कोई निर्दयता से गाड़ी से ही धकिया देता।

एक बैल गुस्से से लाल हो गया उस गाड़ी का शीशा भी तोड़ दिया परिणाम स्वरूप डंडे खाने पड़े।

कनखियों से सफेद रंग के बैल ने स्थिति संभाली और साथियों से अंधेरा होते ही इकट्ठा होने को कहा। सभी बैल समझ गए। पूँछ हिलाकर सहमति जताई।

शाम को अंधेरा होते ही पीपल के पेड़ के पास सभी इकट्ठे हो गए। जब आवागमन बंद हो गया तो सफेद रंग का बैल बोला साथियो बैल की जून सबसे बुरी जून है। हमें कुछ साल पहले तो पूजा जाता था। पर आज परिस्थिति विपरीत है। हम सब भाई यहां पहुंचा दिए गए और भूखे रहने को विवश हैं तो केवल उस कालू और उस जैसे लोगों की वजह से।

आज हम सब इन्हें सबक सिखाएंगे। सब्जी मंडी की सारी दुकानों को तहस -नहस कर देंगे। चलो मेरे साथ।

सभी बैल इकट्ठे होकर चले गए और अपने मन की भड़ास निकाल ली। कालू भी उस दिन देर से घर जा रहा था। आता हुआ दिखा तो उसे भी सींगों पर रख पटक डाला। बड़ी मुश्किल से भागा। सुबह तक कालू एक पार्क के झूले पर बैठ जान बचाने का प्रयास करता रहा।

जनता त्राहि-त्राहि पुकार उठी। एक बैल दूसरे से बोला : कैसे हैं ये मानव। हम जानवरों को तंग करते कभी नहीं सोचते और हम कुछ करें तो हाय तौबा मचा देते हैं। क्या जीने का अधिकार इन्हें ही है???

अपना फायदा हो तो ठीक नहीं तो किसी पर दया नहीं दिखाते।

ईश्वर इन्हें रास्ता दिखा।

एक बैल जो हृष्ट -पुष्ट था बोला : यह मनुष्य हमें जब आवारा कहते हैं तो मन में बहुत दुःख होता है। इनसे जरा पूछो, हमें आवारा कहते हो आवारा तो आप हैं हम बेजुबान तो बेसहारा हैं। काश! ईश्वर ने हमें भी जुबान दी होती।

पर अब और नहीं यदि हमारे साथ यही निर्दयतापूर्वक व्यवहार होता रहा तो हम भी मानवों को चैन से नहीं रहने देंगे।

कालू को भी अपने किए पर पछतावा हो रहा था। उसने घर जाकर पत्नी को वचन दिया किसी भी लालच में आज से गलत काम नहीं करेंगे ।

हमें तो हमारे बैलों ने सबक सिखा दिया अब हम औरों को जीवन में कोई गलत काम न करने की प्रेरणा देंगे।

✍ प्रतिभा शर्मा

सामान्य ज्ञान

केंचुए की खाद से खेती के लाभ हैं?

केंचुएं को पुथ्वी की आंत, प्रकृति का हलवाहा, मृदा उर्वरता का बैरोमीटर, किसान का सच्चा मित्र कहा जाता है। इसकी खाद से कृषि में अनेक लाभ हैं जैसे-मृदा के भौतिक तथा जैविक गुणों में सुधार लाना, मृदा संरचना/संचार में सुधार हो लाना, नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होना, कूड़े-कचरे से होने वाले प्रदूषण पर नियंत्रण होना। वर्मी-कम्पोस्ट- एक लघु कुटीर उद्योग के रूप में रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है तथा रासायनिक उर्वरकों की खपत कम करके मृदा स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने का एक प्रभावी उपाय है तथा फलों, सब्जियों तथा खाद्यान्नों की गुणवत्ता में सुधार लाना तथा उनकी उपज में वृद्धि होना जैसे इसके अनेक लाभ हैं।

1. गांव के विकास के लिए केन्द्र सरकार द्वारा शुरू किया गया 'उन्नत भारत अभियान' सरकार के किस मंत्रालय के अधीन संचालित है?
2. किस महाद्वीप में एक भी ज्वालामुखी नहीं है?
3. एशिया का सबसे प्राचीन एवं विश्व का तीसरा सबसे प्राचीन फुटबाल टूर्नामेंट कौन सा है?
4. हिमाचल प्रदेश विधानसभा की प्रथम महिला अध्यक्ष कौन थी?
5. विश्व की सबसे कम आयु की पर्वतारोही जिसने 1993 में एवरेस्ट चोटी पर विजय प्राप्त की थी?
6. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का मुख्यालय कहां स्थित है?
7. दादा साहब फाल्के पुरस्कार किस क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार है?
8. किस रेलवे स्टेशन को सर्वाधिक पर्यटन मित्र रेलवे स्टेशन के रूप में सितम्बर, 2019 में पुरस्कृत किया गया है?
9. कृषि के क्षेत्र में नए-नए अनुसंधान करने के लिए सरकार ने 1978 ई. में कांगड़ा में किस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी?
10. सन् 1960 में कौन सा जनपद हिमाचल प्रदेश का छठा जिला बना था?
11. डोडरा क्वार क्षेत्र के लिए किस दर्रे को पार करना पड़ता है?
12. एशिया का सबसे ऊंचा मनोरंजन पार्क कहां पर स्थित है?

प्रस्तुति : रीना नेगी

उत्तर- 1. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2. ऑस्ट्रेलिया, 3. डूरंड कप, 4. विद्या स्टोक्स, 5. डिकी डोलमा, 6. वाशिंगटन डीसी, 7. सिनेमा, 8.विशाखापट्टनम, 9. कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर, 10. किन्नौर, 11. चांशल दर्रा, 12. कुफरी।

स्वास्थ्य

गुर्दे फेल होने पर आयुर्वेदिक उपचार

मानव शरीर में स्वस्थ अवस्था में गुर्दे लगभग एक सौ पच्चीस मिलीलीटर रक्त एक मिनट में शुद्ध करते हैं। गुर्दों के द्वारा हमारे शरीर से विषाक्त एवं अनुपयोगी तत्व बाहर हो जाते हैं। जब गुर्दों की यही कुदरती क्रिया बाधित होती है, तो रक्त से विष जातीय तत्व बाहर नहीं हो पाते हैं, जिसके परिणाम-स्वरूप रक्तगत विषाक्तता बढ़ने लगती है। यह स्थिति जानलेवा सिद्ध होती है। इसे ही गुर्दों के फेल होने के नाम से जाना जाता है। चिकित्सकीय भाषा में इसे एनयूरिया अथवा सप्रैशन ऑफ यूरिन भी कहा जाता है। गुर्दे फेल होने के दो प्रकार कहे गए हैं। पहला प्रकार है-एक्यूट किडनी फेल्योर। दूसरा प्रकार है क्रोनिक किडनी फेल्योर।

ऐक्यूट किडनी फेल्योर-

यह अवस्था अचानक पैदा होती है।

मूत्र-त्याग करने में बहुत ही कमी आ जाती है।

सारे शरीर में सूजन आ जाती है।

त्वचा में खुजली होना

इस अवस्था में जब रोगी का वजन दिन प्रतिदिन बढ़ने लग जाए, तो समझें कि खतरा बढ़ रहा है।

रोगी के चेहरे पर सूजन आने लगती है।

रोगी उल्टी आने तथा बहुत अधिक थकान की शिकायतें कर सकता है।

जैसे-जैसे रोग बढ़ने लगता है तो रोगी की श्वास में भी पेशाब की दुर्गंध आने लगती है, जो कि एक मारक लक्षण कहा जा सकता है।

गुर्दों का तीव्र संक्रमण भी गुर्दे फेल होने का प्रमुख कारण है।

अनेक बार गुर्दों पर लगी तीव्र चोट भी गुर्दे फेल होने का कारण बन जाती है।

अन्यान्य कारणों में डिहाइड्रेशन, विषाक्तता, बर्न (जलना) तथा अन्यान्य अवयवों में पैदा हुआ फेल्योर भी इसका कारण माना जाता है। गर्भवती महिलाओं में पैदा हुआ टॉक्सीमिया भी इसका कारण माना गया है।

क्रोनिक किडनी फेल्योर

यह अवस्था बहुत धीरे-धीरे पैदा होती है। एलोपैथिक विशेषज्ञों के अनुसार यह अवस्था सामान्य तौर पर अपरिवर्तनीय होती है, जबकि आयुर्वेद के अनुसार रोग की इस अवस्था में भी उपचार किया जाना सम्भव होता है, तथा अनेक सकारात्मक सम्भावनाएं रहती हैं।

आरंभ में रोग के स्पष्ट लक्षण दृष्टिगत नहीं होते हैं लेकिन धीरे-धीरे थकान, सुस्ती, सिरदर्द इत्यादि लक्षण पैदा होने लगते हैं।

अनेक रोगियों में पैर में खिंचाव आना, मांसपेशियों में खिंचाव आना, हाथों एवं पैरों में सुन्नता आना तथा दर्द होना इत्यादि लक्षण देखने को मिलते हैं।

पोटेशियम की मात्रा भी नियंत्रित होनी हितकर है। इस दृष्टि से केले का सेवन बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होता है। दिन भर में अनेक बार केले का सेवन करना चाहिए। केले में प्रचुर मात्रा में कार्बोहाइड्रेट्स पाए जाते हैं और इनमें कम मात्रा में प्रोटीन एवं नमक पाए जाते हैं।

रोग की बढ़ी हुई अवस्था में जब रोगी का वजन बढ़ने लगता है, तो रोगी भूख कम लगने की शिकायतें करता है। उल्टी आने, जी-मिचलाने तथा मुंह का स्वाद खराब होने की शिकायतें करता है।

किडनी फेल्योर के अन्यान्य कारण-

ग्लोमेरुनेफ्रायटिस-इस रोग में गुर्दों की छनन-यूनिट (नेफ्रांन्स) में धीरे-धीरे सूजन आ जाती है तथा ये नष्ट हो जाते हैं। साधारणतया गुर्दे फेल होने का यह सबसे साधारण कारण माना जाता है।

मूत्र के वेग को रोकने की आदत।

अधिक मात्रा में नमक का सेवन करना।

बहुत ही कम मात्रा में पानी पीना।

मधुमेह (डायबिटीज), उच्च रक्तचाप (हाइपरटेंशन) भी धीरे-धीरे गुर्दों की कार्यक्षमता को बुरी तरह से प्रभावित करते हैं।

विविध दर्द-निवारक औषधियों तथा प्रतिजीवी औषधियों का अंधाधुंध और निरंतर सेवन करना।

अंधाधुंध मांस-मदिरा का सेवन करना।

सॉफ्ट-ड्रिंक्स एवं विविध कॉल्ड-ड्रिंक्स का सेवन करना

कब होते हैं मूत्रवाही स्रोतस खराब ?

जब कोई व्यक्ति मूत्र की हाजत होने पर भी मूत्र त्याग नहीं करके, पानी पीता है, या मूत्र त्याग करने के स्थान पर आहार ग्रहण करता है।

मूत्र के वेगों को रोकना।

रस रक्त इत्यादि धातुओं में पैदा हुई कमजोरी।

मूत्रक्षय क्या है ? आयुर्वेदीय ग्रंथ माधव निदान के अनुसार रूक्ष प्रकृति

डॉ. अनुराग विजयवर्गीय

तथा विविध रोग इत्यादि से कमजोर हुए व्यक्ति के मूत्रवाह संस्थान में पित्त और वायु नामक दोष प्रकुपित होकर मूत्र का क्षय कर देते हैं, जिससे रोगी को पीड़ा एवं जलन होने लगती है। यही रोग मूत्रक्षय है। इस अवस्था में मूत्र बनना कम या बंद हो जाता है।

आयुर्वेदीय उपचार कैसे करें

नियमित रूप से अनुलोम-विलोम प्राणायाम का अभ्यास करें। इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति का तनाव-प्रबंधन करने पर रोग निवारण में बहुत लाभ मिलता है।

सीरम क्रिएटिनीन व यूरिक ऐसिड बढ़ने पर-रोगी को उन खाद्य पदार्थों से परहेज कराएं, जिनमें प्रोटीन (प्यूरीन) की मात्रा अधिक पाई जाती है जैसे-विविध अंगों का मांस जैसे यकृत, गुर्दे, दिमाग, मांस रस, सूखा मांस, शोरबा, सूखे हुए मटर, हरे मटर, फ्रैंचबीन, बैंगन, मसूर, उड़द, चना, बेसन, कढ़ी, अरबी, कुलथी, राजमा, भिंडी, सेम, पालक, मेथी, बथुआ इत्यादि हरी-सब्जियां दही, लस्सी, अचार, विविध बेकरी उत्पाद, पनीर, मशरूम, चीकू, सेब, इमली, अमचूर, आइसक्रीम, जमीकंद, कांजी, रेड वाइन, बियर तथा अन्यान्य अलकॉहलिक पेय-पदार्थ। समुद्री नमक का सेवन भी पूरी तरह से बंद कर दें। हलकी मात्रा में सैंधा-नमक सेवन किया जा सकता है। कम मात्रा में टमाटर भी सेवनीय हैं। नींबू का रस भी सेवन किया जा सकता है। कालीमिर्च का सेवन भी लाभप्रद है। चैरी का सेवन भी अमृत के समान लाभप्रद है। पाइन ऐपल तथा आलू का सेवन भी हितकारी है।

ब्लडप्रैशर बढ़ने पर- समुद्री नमक, इमली, अमचूर, लस्सी, चाय, कॉफी, तली भुनी चीजें, पूरी-परांठा, मिठाइयां इत्यादि गरिष्ठ आहार, अति परिश्रम, अधिक मात्रा में कसैले खाद्य-पदार्थ, धूप में रहना, अधिक क्रोध, स्त्री सहवास, चिंता, अधिक बोलना इत्यादि से अनिवार्य रूप से परहेज करें। काले नमक का सेवन करना लाभप्रद है, क्योंकि यह धमनियों में रक्त-प्रवाह को सुचारू रूप से करता है तथा उनमें आए हुए अवरोधों को दूर कर देता है।

गुर्दे फेल होने पर-

ऐसे खाद्य-पदार्थों का सेवन करें, जिनमें नमक तथा फास्फोरस की मात्रा कम हो। पोटेशियम की मात्रा भी नियंत्रित होनी हितकर है। इस दृष्टि से केले का सेवन बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होता है। दिन भर में अनेक बार केले का सेवन करना चाहिए। केले में प्रचुर मात्रा में कार्बोहाइड्रेट्स पाए जाते हैं और इनमें कम मात्रा में प्रोटीन एवं नमक पाए जाते हैं। टमाटर व सिरका (कम मात्रा में)।

सेवन करें-बीट, गाजर, तोरई, टिंडे, ककड़ी, अंगूर, तरबूज, अनानास, नारियल पानी, गन्ने का रस, इलायची, सेब। यदि डायबिटीज है तो गन्ने के रस का सेवन नहीं करें। विशेष बात यह है कि सभी फल मूत्र को खुलकर लाने तथा मूत्र की मात्रा को बढ़ा देने वाले गुणों से युक्त होते हैं। किडनी फेल होने की अवस्था में इनका सेवन किया जाना अमृत के समान लाभ देता है।

मोसमी, संतरा, किन्नू, कीवी, खरबूजा, आंवला, पपीता का सेवन भी परम हितकर माना जाता है। रात को तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी सवेरे पिएं।

सेवन कर सकते हैं-अमचूर, गाजर का सूप, कुलथी का काढ़ा, गोखरू से बना हुआ काढ़ा, ककड़ी, खीरा, नींबू का रस, दही, काली मिर्च, चैरी, पत्ता गोभी, पाइन ऐपल, रैड केबेज, संतरा, आलू।

(क्रमशः)

कविता

गांव की बात और है

संस्कृति और संस्कार
मनुष्य जीवन के दो बड़े सबूत है,
अब हर बात लोग
विज्ञापन के ढंग और ढांचे के अनुसार करते हैं।
बड़ी-बड़ी खबरों के मुंह
विज्ञापन से ढके हैं।
शहरों की यही तो बात है कि उसे शहर कहते हैं।

गांव में बिल्लियों का रास्ता काटना,
अंध श्रद्धा ही नहीं बल्कि आस्था का प्रतीक भी तो है
आंगन में चूल्हे पर रोटी सेकना,
पास में ही घास का उगना,
किसी गली-चौराहे पर
मंदिर देखकर माथा टेकना,
सब गांव में ही रह गया है।
अगर बचा है तो
शहरों का यांत्रिक और विज्ञापनों का दौर।

किरदार हो या किराये के मकान
घर में रोकर काटी गई रात भी और थी।
शहरों की भीड़ हो या भीड़ में अपना अकेलापन
लेकिन, गांव में टहलने की बात भी और थी।

अब भी जीवित है
बुजुर्गों की बातों में सत्य,
ऐसा न हो कि आने वाली पीढ़ी
मीडिया और मनोरंजन तक ही न सीमित रह सके
लेकिन शहरों में 'सत्य' और 'तथ्य'
दोनों ही गायब है।

मुकेश कुमार

प्रेरणात्मक प्रसंग

ईश्वर की सच्ची पूजा

एक दिन शेख को रात के समय एक स्वप्न दिखाई दिया। उसने देखा कि एक देवदूत उसके कमरे में खड़ा है। वह देवदूत एक सोने की किताब में कुछ लिख रहा था।

शेख ने देवदूत से पूछा, ' श्रीमान जी, आप क्या लिख रहे हैं ?' देवदूत ने उत्तर दिया, 'मैं उन लोगों का नाम लिख रहा हूं जो ईश्वर के सबसे बड़े भक्त हैं। शेख ने अपना सिर झुकाकर निराश भाव से कहा, क्या अच्छा होता कि दूसरों के समान मैं भी ईश्वर का पूजारी होता। मैंने तो कभी न प्रार्थना की, न भजन किया, न व्रत और उपवास रखा और न कभी मस्जिद में नमाज पढ़ने गया। निश्चय ही मेरा नाम आपकी सूची में नहीं होगा। मुझ को स्वर्ग में प्रवेश नहीं मिलेगा। देवदूत ने उत्तर दिया, क्या किया जाये। मजबूरी है। आपका नाम तो सचमुच मेरी सूची में नहीं है।

तब शेख ने उससे एक प्रश्न और पूछा, 'क्या आप कभी कोई ऐसी सूची भी बनायेंगे जिसमें उन लोगों के नाम लिखें जायेंगे जो ईश्वर के बजाए मनुष्य मात्र को और सारे विश्व को प्यार करते हैं। देवदूत ने उत्तर दिया, जी हां। मुझे एक ऐसी सूची भी बनानी हैं। शेख ने प्रार्थना की, 'कृपा करके मेरा नाम मनुष्यों की उस सूची में रखना जो मनुष्य की पूजा करते हैं, में लिख लीजिए।

देवदूत ने ऐसा ही किया और अन्तर्ध्यान हो गया। दूसरे दिन शेख को फिर वही स्वप्न दिखाई दिया। सोने की पुस्तक लिये हुए देवदूत फिर आया। कमरे में खड़ा होकर वह अपनी पुस्तक के पन्ने पलटने लगा। शेख ने पूछा आप क्या कर रहे हो। देवदूत ने उत्तर दिया, ' मैं अपनी किताब की पुनरावृत्ति और संशोधन कर रहा हूं। मैंने ईश्वर के भक्तों के नाम उनकी योग्यता के क्रम में लिख डाले हैं।' शेख ने देवदूत से उस पुस्तक को देखने की अनुमति मांगी। देवदूत ने उसको पुस्तक दिखा दी। उसे देखकर शेख को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसने तो अपना नाम 'मनुष्य पूजकों' की सूची में लिखाया था परन्तु पुस्तक में उसका नाम ईश्वर भक्तों के सबसे प्रथम स्थान पर लिखा था। यह बहुत अनोखी बात लगती है किन्तु है सत्य। यदि मानव की पूजा करें अर्थात् मानव को मानव न माकर ईश्वर का स्वरूप मानें और संसार को ईश्वर का अंश मानें तो ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा यही है। ईश्वर की सर्वोत्तम पूजा करने की विधि अपने मित्र की आत्मा में ईश्वरत्व मानकर उसकी पूजा करना है। यदि हमको अपने मित्रों में कोई दोष दिखाई पड़े तो हमें चाहिए कि हम उन दोषों से बचें, किन्तु अपने मित्रों से घृणा न करें। दुश्मन से भी घृणा न करें। क्योंकि वे सब ईश्वर के स्वरूप हैं और उनमें ईश्वर विद्यमान है। इस प्रेरणात्मक प्रसंग से शिक्षा मिलती है कि 'सारी मानव जाति को प्यार करना हर व्यक्ति में ईश्वत्व के दर्शन करना, हर प्राणी को ईश्वर मान कर उसकी सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची पूजा-अर्चना है।

यदि मानव की पूजा करें अर्थात् मानव को मानव न मानकर ईश्वर का स्वरूप मानें और संसार को ईश्वर का अंश मानें तो ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा यही है।

● किशन चन्द चौधरी

युवा मंच

ऐनेस्थियोलॉजी में भी शानदार करियर

ऐनेस्थियोलोजिस्ट का काम ऑपरेशन से पहले शुरू होता है और ऑपरेशन के बाद तक जारी रहता है। उनकी जिम्मेदारी होती है कि वो मरीज को ठीक तरह से बेहोश करें, उसे किसी भी तरह की दर्द या तकलीफ न हो, साथ ही शरीर के सारे अंग ठीक से काम करते हो। एक्सीडेंट रेस्क्यू, आईआरसीयू, आईसीयू, पेन क्लीनिंग और डिसास्टर मैनेजमेंट के साथ-साथ सर्जिकल टीम में भी ऐनेस्थियोलॉजिस्ट की आवश्यकता होती है।

इस तरह बन सकते हैं ऐनेस्थियोलॉजिस्ट

12 में साइंस विषय के साथ मैथ्स या बायोलॉजी से पढ़ाई करने के बाद किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान से एमबीबीएस करने के बाद ऐनेस्थेसियोलॉजी में एमडी की पढ़ाई की जा सकती है। ये दो साल का कोर्स होता है। ध्यान देने वाली बात है कि ऐनेस्थेसियोलॉजी में करियर बनाने के लिए क्रिटिकल केयर मेडिसिन, कार्डियोलॉजी, फार्माकोलॉजी, ऐनेस्थियोलॉजिस्ट न्यूरो सर्जरी, मैक्सीलोफेसियल सर्जरी, कार्डिक ऐंड थोरेसिस सर्जरी आदि के क्षेत्रों में भी स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं।

ऐनेस्थियोलॉजिस्ट का कार्यक्षेत्र

ऐनेस्थियोलॉजिस्ट को सर्जरी से पहले, सर्जरी के दौरान और सर्जरी के बाद मरीज के शरीर के तापमान, ब्रीथिंग, हर्ट रेट आदि की मॉनिटरिंग भी करनी होती है। ऐनेस्थियोलॉजिस्ट ऑपरेशन रूम के अन्दर तो मरीज को शांत और सहज रखने की कोशिश करते ही हैं लेकिन ऑपरेशन थिएटर के बाहर भी वे इंटेंसिव केयर यूनिट (आईसीयू) में गंभीर और पुरानी बीमारी से परेशान मरीजों को दर्द से निजात दिलाने का काम करते हैं। इमरजेंसी रूप में ड्रग ओवरडोज, हार्ट अटैक तथा शॉक्स आदि के अलावा गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों को भी ऐनेस्थियोजिस्ट ही संभालते हैं।

आप सर्टिफाइट रजिस्टर्ड नर्स ऐनेस्थेटिक, ऐनेस्थेसिया टेक्नीशियन, ऐनेस्थियोजॉजिस्ट असिस्टेंट आदि के रूप में विभिन्न प्रोफाइल पर काम कर सकते हैं।

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला, 4 दिसम्बर, 2019

कहाणी

नवी सोच्चा दे नोवे खिलाड़ी

दिग्विजय कंवर

अज्ज दे धियाड़े सूबेदार मत्ता ई खुश थिआ। पूरे प्रदेश च 'विकास कन्ने रोजगार योजना' दे अन्तर्गत पढ़ाए लिक्खओ जू अपणा रूजगार आप्पी पैदा करणे खातिर तिस्सा जू सूबे दे मन्त्रीओ दे हत्थे 'करमवीर' दा ट्राईट्ल अरू पन्जाह लकख रुपये दा ईणाम दित्आ जाणा था। 'राजराणी ग्राम कृषि उद्योग आ कम्म धन्धे' नांअ दी सहकारिता सोसायटी दा नांअ अज्ज पूरे प्रदेशो दे माअणुआ दी जुवाणा पाप्दे हैग्गा। इस्सा सोसाअटी दे संचालक आ मालिक रिटायरड सूबेदार मेजर हुक्कम सिंग होरां अपणी मेअनता अरू लग्ना नाल न सिरफ इक्क मुश्कल कम्मा जू साण कीत्आ बल्के लाक्के दे पढ़ेअ लिखोअे छोअटू छोअटिआं जू वी नौकरिआं दे पिच्छे नठण दे बदले अपणे कम्म धन्धे चलोअणे विच्चे हर विक्खा पाण्दे मदद कीत्अी। अज्ज इस्सा सोसायटिआ दे घट्ट ते घट्ट बीह प्रोजैक्ट चन्गी तरां कम्म करां दे अरु करीब ज्हार नौजुआण दा कारोबार वी अपणी सोसायटी सथ्थे जोड़ी रक्खआ। परदेशो जू सूबेदार हुक्कम सिंगा दे इस्सा णेक कम्मा पाण्उदे माण अै। सरकार बल्लेअ ते सूबेदार अरू तिन्आ दी सोसायटिआ जू पन्ज साल्ला पअले ईणाम दे नाल पन्जाह लक्ख रुपये दी प्रोत्साहन राशि दित्अी जाई री। इस्सा मौके ते अहाऊ सूबेदार होरां जू अपणी इस्सा बड्डी कामजाबी दे पिच्छे दी असली ताकत आ प्रेरणा दे बारे जलसे दे कट्ठे होअे दर्शका जू वी दस्सणा।

मन्त्रीये ईनाम देणे आअद माईक सूबेदार हुक्म सिंगा जो फड़ाईआ। अरू सूबेदार अपणे भाषण दा आगाज कुस्सा फिल्मी काअणीआ स्अी कीत्आ। इक्क तरफा सूबेदार बेहोशी विच्चे मन्त्री वजीर चन्दा कोलो ईनाम लेई रिआ अरू दूज्जे पास्से डाक्टरो री टीम तिस्सा जू बचाणे खातिर जुटेई रअे। इक्क वाज्ज डाक्टर बंसल दी साफ सुणाई दित्अी, 'डाक्टर, रंजन बेशक मैंने जिस्म से गोली निकाल दी है, लेकिन पेशैन्ट की बाड़ी से काफी खून बह चुका है। बचने का चांस फिफ्टी फिफ्टी है। अच्छा होता मिसेज हुक्कम सिंग स्वयं आ जाती।'

'दोस्तो, आ अलाके दे मर्द ज्वान्स अरू माननीय मन्त्री जी...असला च इस्सा कामजाबिआ पिच्छे इक्क णोखी परेम काअणी हैग्गी। इक्क अेहड़ा पवितर परेम जो मेरी लाड़ीअे अलाके दे पढ़ाए लिखोअे छोअटू छोअटिआं सोग्गी कीत्आ-तिन्आ दी बेरूजगारी दा दुःख दिल्ल ते समझिआ अरू अपणी समझा दे मुताबक दूर करणे दी कोशित कीत्अी। तिन्आ छोअटू छोअटिआं जू अपणे घरो दा मैम्बर बणोआ अरू समझोईआ के कदे वी अपणा हक्क व छडडो अरू न अी दूज्जे दा हक्क मारणे दी सोच्चो। अेहड़ा करणे नाल कमाईओ विच्चे बरकत बणो दी अरू मन्णा च शांति वी रैअण्दी। पर मिज्जो लाड़ीआ जिहा ग्आण न थिआ-अहाऊ ते सिध्धा साधा फौज्जी जवाण जो सिरफ देस्सो लेई मरणा जाणो थिआ इस्सा कम्म धन्धे विच्चे बिल्कुल न्जाण था। दोस्तो, मिज्जो चन्गी तरा जाद अै जाअलू अहाऊ रिटायरमैन्टा पाण्दे घर्रा पुज्जा ताअलू पअला गुस्सा अपणे सबते पुराणे मुआरेआ नौकरा पाण्दे कढ्ढआ अरू अपणा फोज्जी रोब झाडि आ। अहाऊ बोलिआ था, 'सूबेदार हुक्कम सिंगे फौज्जा विच्चे हुक्कम देणा अी सिक्खाआ, लैणा न्अी। तेरे सूबेदरा दी इक्क वाज्जा पाण्दे सारी पलटन खड़ोई जाण्दी थी अरू खड़ोई कन्ने म्आं दे अगले हुक्कम दा इन्तजार करओ थी। अज्ज रिटायरमैन्टा रे बाअद तां अे हुकम बदूली करी कन्ने बडडी गुस्ताखी कीत्अी। आद रक्ख, तिज्जो घर्रो रा पुराणा सेवा दार समझी कन्ने छडडी दित्आ। न्अी ते अेब्बे तिक्कर बोरीआ बिस्तर बंधोई खे दफ्फा करी दिन्दा। तिज्जो सब्जी भाजी आले डोअरू जू पाणी नाल सिन्जणे खातिर बोलिआ था पर तेरे कन्ना जू तक्क न रंगेई।'

जेठ मअीणे दी तपोण्दी धुप्पा विच्चे सूबेदार दी णोखी जिददा अग्गे णोखी रामे दा डिमाग चकरोई ग्आ अरू सोच्चा दां इस्सा फौज्जी मालिका जू कीआ समझाअे के इत्थणी दांअ विच्चे पाणी दी सींजाई नाल बूट्टे पूरी तरां सड़ोइ जाणे। थोड़ा चिर चुप्पी रक्खणे बाअद बोलिआ, 'साअब जी, तुहां जू हाल्ले तिक्कर खेती बाड़ी दा पता थाअ नी। इत्थणी धुप्पा च धरती भक्खी खे अग्गे दा गोला वणी री। पाणी देणे स्अी टिण्डे, भिण्डी आ शिमला मिरचा दे सारे बूट्टे गलोई सड़ोई जाणे। सन्झा जू थोड़ा मौसम थण्डोणे दिओ, अहाऊ पाणी दे नुक्के मोड़ी दिंआगा।'

णोखी रामे दा मुहां खोलणा था के सूबेदार भुडकी ग्आ, 'मरदूद, भालिंगर, गुस्ताख! अेब्बे तू सूबेदार मेजर हुक्कम सिंगा जू खेती बाड़ी सिक्खाणे लग्गआ। तांअ कोलो पअली बार सुणां दा के पाणी री सिन्जाईआ नाल बूट्टे सड़ोई जाण्दे। मतलब मुल्खा दी सरकारा दा डिमाग खराब हुई रा जो सिंजाई रे पाणीआ दे इन्तजामा खाति करोड़ा रुपये खर्चो दी। अेब्बे तू जाई के सरकारा का सलाअकार वणी जा अरू सिंजाई के पाणीआ दे सारे प्रोजैक्ट बन्द कराई दे। ईह ते भाऊ शुकर मणा जो परमेश्वरा दी मेअरा नाल घासणीआ विच्चे कूल्हा दा पाणी बगोई रा न्अी ते सारा साला सुक्का पइओ रैअण्दा। तिज्जो बस नालीआ सकोरी कनने नुक्के मोड़णे दा अी कम्म दित्आ गआ था।

णोखी लाल बुड बुड करोण्दा फरूआ अठाईआ अरू लाग्ग पढ़ोई मिटटीआ दे ढेर्रा जू बरोबर करणे लग्गआ। सूबेदारे वी तिस्सा पिच्छे अपणी बुड बुड जारी रक्खी- पर थोड़ी नीटठी बाज्जा विच्चे। 'मिज्जो पता अै सारा कसूर सूबेदारनिआ दा अै। हर कुस्सा जू जादा मुअ लाई रक्खआ- इस्सा जू सिर मुण्ड बिठोई रक्खआ। सब्ब दे सब्ब कम्मचोर, निकम्मे अरू आलसी वणाई रक्खे-इस्सा णोखी रामा जू इस्सा गल्ला दा पता णी के जे मेरी पलटणा विच्चे होण्दा ताअलू सारा दिणा राअफैल सिरा पाण्दे ते अठाई के सारे दिणा परेड़ ग्राउडां दे चक्कर लगोण्दा।- हुक्कम सिंग इस्सा गल्ला जो भुल्ली गिआ के णोखी राम किच्छ चिरा पअले तिस्सा नाल था अरू अेब्बे रूआल वी नी कीत्आ-सेअ नौ दो ग्यारह हुई मुक्अआ था। तिस्सा जू गैरहाजर देक्ख बुड़बुडोईआ।

'देक्खो इस्सा गुस्ताख मरदूदा जू...विणा बोल्ले ग्लाअे पता णी कित्थ्यू चलोई गिआ।' पर छोडड अी दिल्लो रा भरम टुट्टी गुआ, जाहलू सब्जी के डोअरूआ च पाणी बग्गदा देक्खआ अरू सूबेदार दे चेअरे पाण्दे इक्क बडडी जित्त दी झलको दिक्खी अरू अपणी साज्जी मूच्छो जू मरोड़ी कनने हस्सआ अरू ग्लाईआ, 'णोखी राम! सूबेदार हुक्कम सिंगे हुक्कम देणा अी सिक्खआ-लैणा न्अी। किच्छ दूरा ते णोखी रामा जू घरा बल्लेअ जोण्दा देक्ख सूबेदार वी घर्रा जाणे दी सोच्चा दा अरू खुटटीओ अपणे आप्पी कोठीआ बल्लेअ चलोणीआ सुरू हुई गईआं। बोलां दा, 'हुक्कम सिंग अपणे हुक्कम जू मनोणा वी जाण्दा।'

बाड़े अरू कोठीआ दा फासला हाल्ला के सिरफ तिन्न किलोमीअर दा थिआ पर इत्थणी धुप्पा विच्चे चलोई पाणा बडडी मुश्कला दा कम्म थिआ। बाटटा विच्चे मन्दिरा दे लाग्ग उगोअे दैत्अ डाल्ला दे नीटठे पात्थरो दे लम्बे चौड़े चबूतरे पाण्दे ताश खेल्लदे गड़िआ दे किच्छ लोकां सूबेदारा नाल गल्ल गपप लाणी चाई। पर सूबेदार सूरज कन्ने तपदी धुप्पा दा अशारा करी खे बाटटा चलणा अी चन्गा समझिआ। फेर वी पिच्छांअ ते ओण्दी किच्छ खिस्सर फुस्सर जू अपणे विच्चे ते ओणे ते न्अीं रोक्की सक्कआ। 'सूबेदार रिटाअरमैन्टा ते आई गुआ पर साज्जो णी लग्गदा बेचारा ग्रांअ विच्चे रअी खे कोई चज्जे दा कम्म धन्धा करी सक्कदा। खेती बाड़ी, डंगर-डोअरू संभालणा इस्सा दे वस्सो दा न्अी। पिण्डा दे लोका साथ्थी गल्ल बात करण दा वी तरीका न्अी। मिज्जो ते लग्गदा अलाके दे होर फौज्जिआं स्अी इस्सा वी बीबीएन विच्चे जाई कन्ने सक्यूरिटी कम्पणी ज्वाईण करी लैणी। किच्छ ठ्गड़िआ हस्सणे दी वाज्जा सुणी सूबेदार हैराण होईआ अरू सोच्चदा। 'इन्आ ग्रांअ आलिआ जू कुस्सा बोली रक्खआ के मूअे म्आं दे बारे सोचण-विचारण ?' दिल्ल ते कीत्आ गले ते फड़ी खे किच्छ पुच्छ गिन्न करी ल्अे पर दूर गेटटा पाण्दे खड़ोई राजराणीआ जू देक्ख कोठीआ कन्ने बधोई गिआ।

'इत्थणी शिक्खर दोपअरा तुहां कित्थू चलोई गुअे। लोक्कां इत्थणी पनअूटी विच्चे घर्रा के बाअर णी निकलोण्दे अरू खाई पीई के अरामा करदे अरू तुहां बाअर लग्गी रे हाण्डणे। अन्दरा चल्लो अेब्बे खाई पीई के राम्म करो।' हुक्कम सिंगे अपणी लाड़ीआ दे ग्लाणे दा जवाब देणा ठीक्क णा समझिआ अरू चुपचाप कोठीआ च दाखिल हुईगा।

'बच्चे क्आ करा दे-खाणा खाई लित्आ क्आ ?' सूबेदारे पुच्छआ। 'आरती अरू अमन काफी देरा डीक्कदे रअे। अेब्बे अी खाणा खाई कन्ने अपणे कमरे सोणे जाई रे। तुहां वी झटट खाई ल्ओ अज्ज दोपअरा शक्ति भाई वी पुज्जणे आला अै।'

शक्ति! शक्तिअे दा नांअ सुणदे अी हुक्कम सिंगा दे चेअरे लाली आई गुई। 'मतलब अज्ज बडडे साले साअब औणे लग्गी रे-ईह ते बडडी खुशीआ दी गल्ल अै। फेर अज्ज ते रात्ती जू खाणा पीण खड़का दड़का करणा पोणा।' 'तुहां जो सोचणे दी लोड़ न्अी। णोखी राम्मा ते पअले अी सारा सामण मंगाइ रक्खआ। तुहां दे रिटायरमैन्टा दी पार्टी पाण्दे अहाऊ किच्छ प्रोग्राम वी रखोईआ अै। पर तुहां दोनो जीजा साला लग्ग वी मणोई सक्कदे, क्यूंके अहाऊ लाक्के दे मरद ज्वान्सा साथ्थी ग्रांअ दी प्राबलमा बारे वी गल्ल बात करणी।'

'णोखी राम भिआगा अी सारा सामाण पुराणे मकाणा विच्चे छड़ोई गिआ अरू तिस्सा अी बोटीआं दा इन्तजाम करी रक्खआ। सग्गो बोटटीअे ते अेब्बे पुज्जणे आले होणे।'

'णोखी राम! क्आ इत्थणा बडडा जिम्मा लेई सक्कदा ?' सूबेदार सवाल कीत्आ। 'तुहां जू क्आ पता णोखी रामा बारे। बडडे कम्मा दी चीज अै णोखी राम, हुकम जी।' राजराणीअे सफाई दित्अी। हुक्कमे सिंगे वी समझदारी नाल कम्म लैण्दे चुप्प रअणे दा फैसला लिआ अरू डोअरू सिंजाई दा जिक्रा तक्क नी कीत्आ।

000 000

संझा कोई पन्ज बजे हुक्कम सिंग दी अक्ख खुलोई गुई अपणे बैंडडा दे लाग्ग पड़ोअे तख्तपोशा पान्दे रखोईआ शक्ति सिंगे दा ब्रीफकेस पछाणी लित्आ। बाथारूमा म्अे ते पाणी चलणे दी बाज्जा दा मतलब ईंहो था के साल्ला साअब न्आणे धोणे अन्दर जाई रे। ब्रीफकेसा पाण्दे पड़ोई री इक्क मोटी फाईल पता णी कीहां फिस्लोई कन्ने फरशो पाण्दे आ डिग्गी अरू तिस्सा अन्दरा दे सारे कागज पत्तरू ओरडे-पोरडे खिण्डोई गुअे। उठी के हुक्कम सिंग तिन्आ कागजा जू कट्ठा करी खे फाईला विच्चे दोआरा रक्खणे खातिर उट्ठआ पर जीहां अी नजर फर्शो पाण्दे पई रे रंगीन कागजा पाण्दे पड़ोई, सूबेदार सुन्न रअी ग्आ। मुहां बिच्चे बुड़बुड़आ, 'राजराणी जू हट टैक्क 5 दिसम्बर, 1999 ठीक दो बज्ज के बीह मिन्ट पाण्दे।' ...मतलब अैणा तिस्सा वक्ते अरू तिस्सा धियाड़े जाअलू अहाऊ दुश्मणा दे बम्ब स्पलिन्टरा स्अी बुरी तरा जख्मी हो ईआ था। ईह ते डॉक्टर अरू साथी दे जुआण दस्सी सक्कदे म्आं दा बचणा कित्थणा मुश्किल थिआ। मतलब मेरी राजरानीअे वी तिस्सा दिणे अपणा बिस्तर बोरीआ बन्अी लिआ था-णोखा इत्तफाक थिआ। कागज पतरू देक्खी कन्ने हुक्कम सिंगा दे अक्खी पाणी आई गुआ। आणकी भैण भाईअे इत्थणी बडडी गल्ल म्आं ते छुपाई रक्खी थी। चाणक इक्क नजर चिट्ठीआ पाण्दे पोई।

(क्रमशः)

गज़ल़

अपणे पत्ते खोल्ला जी,
प्यारी भास्सा बोल्ला जी।

दुनियां नंगधड़ंगी ऐ,
बिगड़ा करदा टोल्ला जी।

नफरत न्हस्सै देस्से ते,
मिलियै प्यार फरोल्ला जी।

डोई हत्थ तुहाड़ैं जे,
ठंडा पक्खा झोल्ला जी।

देस-सिओई चाद्दर जो,
पैस नैं नीं तोल्ला जी ।

लोक 'नवीन' नकारा ऐ,
रुक्ख बड़ा-ई पोल्ला जी।

-नवीन हलदूणवी

कबता

सदिया दी नौंईं हवा चल्ली

दीये दीयूंड ते पीढ़ियां मंजे मुकदे-मुकदे मुकी चले।
हर दरिया पुर डैम बणी ए सब रुकदे-रुकदे रुकी चले।।

प्रेम-प्यारे रे सारे कंबल जेहड़े रक्खे पुरखेयां सांबी थे
सारेयां ई स्वार्थ-बैरे दे चूहे ट्रुकदे-ट्रुकदे ट्रुकी चले।।

हरे-भरे थे जेह्डे बूटे संस्कारां कन्ने मुहब्बतां दे।
आया नौक्खा वक्त इदेया सुकदे-सुकदे सुकी चले।।

बद्दल-बरख्खा धुप्प ह्नेरा हर रस्ते बिच्चे दुस्साःदा।
चन्न-चानणी, धुप्प-ध्याड़े मुकदे-मुकदे मुकी चले।।

सदिया दी नौंईं हवा चल्ली, लज्ज-शर्म सब उड्डी गे।
चुन्नी-पैंटां-कुर्तु सारे ट्रुकदे-ट्रुकदे ट्रुकी चले।।

जैहरे धरती गेई भरोई अंबर बिसला होई गिया।
प्रेम-मुहब्बता दे सब पंछी लुकदे-लुकदे लुकी चले।।

जाति-धर्म दे कंडे दिकखा रस्ते-रस्ते बिखरे दे।
अमन-शांति दे सारे ठुंडे धुखदे-धुखदे धुखी चले।।

-अशोक 'दर्द'

मिल्कफेड ने बाजार...

(पृष्ठ 1 का शेष) है कि मिल्कफेड प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों से प्रतिदिन 1.40 लाख लीटर दूध एकत्र कर रहा है। डेयरी विकास प्रदेश की ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह क्षेत्र वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सोच भी है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश सम्भवतः देश का पहला राज्य है, जो अपने उपभोक्ताओं को फोर्टिफाइड गेहूँ का आटा उपलब्ध करवा रहा है।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित परियोजना के अन्तर्गत मिल्कफेड वर्ष 2020 में मण्डी और शिमला जिला के दत्तनगर में दो नए दूध प्रसंस्करण प्लांट स्थापित करने जा रहा है। इससे प्लांट की क्षमता दोगुनी हो जाएगी।

ग्रामीण विकास, पंचायती राज एवं पशुपालन मंत्री श्री वीरेन्द्र कंवर ने मिल्कफेड की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि आज मिल्कफेड विभिन्न उत्पादों के लिए एक विश्वसनीय ब्रांड बन कर उभरा है। राज्य सरकार ने पहाड़ी गाय के पोषक तत्वों से भरपूर दूध को 'हिम गौरी' फोर्टिफाइड दूध के रूप में बाजार में उतारा है। राज्य सरकार देसी नस्ल की गायों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है और पशुपालन विभाग व डेयरी विकास किसानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मिल्कफेड के अध्यक्ष निहाल चन्द शर्मा ने कहा कि मिल्कफेड प्रतिदिन लगभग 14000 लीटर दूध सैन्य बलों को उपलब्ध करवा रहा है। उन्होंने किसानों से लिए जाने वाले दूध की कीमतों में बढ़ौतरी के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

टाटा ट्रस्ट के वरिष्ठ सलाहकार विवेक अरोड़ा ने कहा कि विटामिन 'ए' और 'डी' की कमी से बच्चों एवं व्यस्कों में कई गम्भीर बीमारियां हो सकती हैं। देश में 66 करोड़ लोग किसी न किसी विटामिन की कमी से जूझ रहे हैं। उन्होंने दूध, तेल और चावल को फोर्टिफाई करने की दिशा में राज्य सरकार के प्रयासों की सराहना की।

नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड की समन्वयक जी. राज ने कहा कि प्रदेश के लोगों को अब फोर्टिफाइड दूध उपलब्ध होगा, जो बड़ी उपलब्धि है।

मिल्कफेड के महाप्रबन्धक भूपेन्द्र अत्री ने फोर्टिफाइड दूध के महत्व पर प्रकाश डाला। उद्योग मंत्री बिक्रम सिंह, मुख्य सचिव डॉ. श्रीकान्त बाल्दी, विशेष सचिव डी.डी. शर्मा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के निदेशक नरेश कुमार लठ, शिमला के उपायुक्त अमित कश्यप भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

शिक्षा का हब बनेगा...

(पृष्ठ 1 का शेष) लड़कों की अपेक्षा अधिक पदक प्राप्त करने के लिए छात्राओं को बधाई दी।

युवाओं में नशे के बढ़ते प्रचलन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि विद्यार्थियों को इसके विरूद्ध एक व्यापक अभियान आरम्भ करना चाहिए। यह समाजिक बुराई समाज के अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा बनती जा रही है। उन्होंने शिक्षकों और अभिभावकों से भी नशे के खिलाफ अभियान में शामिल होने का आग्रह किया। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय पूरे उत्तरी भारत में प्रमुख शैक्षणिक संस्थान के रूप में उभर रहा है।

केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर ने इस अवसर पर कहा कि युवा देश की सबसे बड़ी ताकत हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश विश्वविद्यालय के सुदृढ़ीकरण के लिए हर सम्भव सहयोग दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने पिछले तीन वर्षों में 37.70 करोड़ नए बैंक खाते खोले हैं, जिससे डिजिटल भुगतान सुनिश्चित हुआ है। उन्होंने जनकल्याण और प्रदेश के विकास के लिए विभिन्न नई योजनाएं आरम्भ करने पर प्रदेश सरकार के प्रयासों की सराहना की।

शिक्षा मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश विश्वविद्यालय को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रतिबद्ध है और इसका बजट 130 करोड़ रुपये तक बढ़ाया गया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रदेश विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और खेल गतिविधियों में निरंतर प्रगति करता रहेगा। प्रदेश विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार घनश्याम चन्द ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

उद्योगों को भूमि उपलब्धता...

(पृष्ठ 1 का शेष) कि सरकार निवेशकों को हरसंभव सहायता प्रदान करे।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि वैश्विक निवेशक सम्मेलन बहुत सफल रहा और सरकार 93 हजार करोड़ रुपये के निवेश वाले 709 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने में सफल रही है। उन्होंने कहा कि हिम प्रगति पोर्टल के माध्यम से 78 निवेशकों ने अपने 200 मुद्दे उठाए थे, जिनमें से 154 का समाधान किया जा चुका है। इसके साथ-साथ सरकार सुनिश्चित बना रही है कि धारा 118 के सभी मामलों को ऑनलाइन स्वीकृतियां दी जाएं। इससे निवेशकों के समय की बचत होगी और पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता भी आएगी।

उन्होंने कहा कि निवेशकों को निर्धारित समय में सभी स्वीकृतियां प्रदान करने के लिए सभी बड़ी परियोजनाओं के नोडल अधिकारी तैनात किए जाने चाहिएं। उन्होंने अधिकारियों को प्रत्येक निवेशक के साथ नियमित रूप से सम्पर्क में रहने और उनकी ओर से उठाई गई किसी भी समस्या का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने निवेश के लिए उपयुक्त माहौल तैयार किया है। इसके लिए कई अनापत्ति प्रमाणपत्रों की अनिवार्यता को हटाया गया है और नीतियों को भी सरल किया गया है। भारत सरकार की ओर से जारी रैंकिंग में व्यापार में सुगमता में हिमाचल प्रदेश को श्रेय दिया गया है। शहरी विकास मंत्री श्रीमती सरवीन चौधरी ने कहा कि ऊर्जा व पर्यटन के अलावा आवास, शहरी विकास क्षेत्र में भी बड़े पैमाने पर एमओयू हस्ताक्षरित हुए हैं। इनमें आवास निर्माण, स्मार्ट पार्किंग और स्मार्ट ट्रांसपोर्ट सिस्टम आदि शामिल हैं। उद्योग मंत्री श्री बिक्रम सिंह ने कहा कि हिम प्रगति पोर्टल से निवेशकों को बहुत राहत मिली है और वह आसानी से अपनी परियोजनाओं के संदर्भ में हो रही प्रगति की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मुख्य सचिव डॉ. श्रीकांत बाल्दी ने आश्वस्त किया कि अधिकांश एमओयू को शीघ्र धरातल पर उतारने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएंगे।

राज्य विद्युत बोर्ड का हरोली में...

(पृष्ठ 1 का शेष) कांगड़ में एक जनसभा को संबोधित करते हुए यह घोषणाएं कीं। उन्होंने ऊना जिले के अपने दौरे के दूसरे दिन हरोली विधानसभा क्षेत्र में 65 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया।

उन्होंने कहा कि सरकार के जन मंच कार्यक्रम से लोगों को अपनी समस्याओं का समाधान अपने घरों के समीप करवाने की सुविधा मिली है। प्रदेश सरकार ने एक और कदम बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री सेवा संकल्प योजना-1100 आरंभ की है ताकि जन शिकायतों का निवारण न्यूनतम समय में हो सके।

हरोली खण्ड में मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना के अंतर्गत 700 कनाल भूमि की समग्र बाइबंदी से 200 किसान होंगे लाभान्वित।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार 27 दिसम्बर को अपना दो वर्ष का कार्यकाल पूरा होने के अवसर पर हिमाचल को धुंआ रहित राज्य घोषित करने के प्रयास कर रही है। उन्होंने लोअर कांगर सड़क के लिए 20 लाख रुपये और ऊना-जजोन सड़क के लिए 15 लाख रुपये देने की घोषणा की।

उन्होंने कहा कि रावमापा ढक्की (पंजवार) के भवन का निर्माण शीघ्र किया जाएगा। उन्होंने केलुआ में प्राथमिक स्कूल और कांगर में आयुर्वेदिक औषधालय खोलने की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्रों के स्कूलों में पंजाबी भाषा अध्यापकों के और पद भरने के प्रयास किए जाएंगे।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बहडाला की नवनिर्मित विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने नाबार्ड के अंतर्गत रायपुर-घंडवाल से अबादा-बराना सड़क के स्तरोन्यन के लिए बहडाला में ऊना-नंगल सड़क का भूमि पूजन किया। उन्होंने बहडाला से जखेड़ा सड़क के स्तरोन्यन कार्य का भी भूमि पूजन किया।

उन्होंने 8.55 करोड़ रुपए की लागत से मैहतपुर में बनने वाले आईटीआई भवन की आधारशिला रखी, मैहतपुर-बसदेहड़ा में सामुदायिक केंद्र और सार्वजनिक पार्क का लोकार्पण किया। उन्होंने अजौली, छत्रपुर, ढाडा, पुन्ना-बिनेवाल सर्कुलर सड़क और पंजाब सीमा तक संतोषगढ़ से सनोली बाया मलूकपुर सड़क के सुधार कार्य का भूमि पूजन किया। इस कार्य पर 5.12 करोड़ रुपए खर्च किए जायेंगे।

इसके अतिरिक्त उन्होंने बाथू-बाथड़ी औद्योगिक गलियारे के सुदृढ़ीकरण कार्य का भी भूमि पूजन किया।

श्री जय राम ठाकुर ने हरोली खंड में सोलर फेसिंग का उद्घाटन कर मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना के अंतर्गत समग्र बाइबंदी (जल, सौर, तार, बाड़) का शुभारंभ किया, जिससे 700 कनाल भूमि की बाइबंदी होगी और 200 किसान लाभान्वित होंगे। उन्होंने हरोली में डीएसपी कार्यालय एवं आवास भवन का शुभारंभ किया और 30 करोड़ रुपए की लागत से विभिन्न गांवों के लिए बिछाई जाने वाली पेयजल आपूर्ति योजना का शिलान्यास किया।

उन्होंने बिडरवॉल, कांटे, सैसोंवाल, पंजावर, लोअर पंडोगा, अप्पर खड्ड और नंगलकलां, बिलना, दुलैहड़, लोअर बढेड़ा, अम्ब जामुन क्षेत्र, सलोह, लोअर कांगड़, बाथू मोहल्ला, अप्पर हरोली और ईसपुर गगरेट मोड़ गांवों के लिए ट्यूबवैल लोकार्पित किए जिसपर 6 करोड़ रुपए व्यय किए गए हैं।

हरोली ब्लॉक की उद्योगपति एसोसिएशन ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए मुख्यमंत्री को 5 लाख रुपए का चैक भेंट किया। शिक्षा खंड हरोली ने भी 4,27,701 रुपए का चैक कोष के लिए भेंट किया।

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री वीरेंद्र कंवर ने इस अवसर पर ऊना जिला के अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान रिकार्ड 208 करोड़ रुपए के शिलान्यास व उद्घाटन के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

हर घर को गैस कुनेक्शन...

(पृष्ठ 1 का शेष) कल्याण के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। उन्होंने कहा कि लगभग 45,000 लोग हिम केयर योजना से लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने कहा कि गम्भीर रूप से बीमार रोगियों के परिवार के लिए प्रति माह 2,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए सहारा योजना आरम्भ की गई है।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि लोगों को उनके घरद्वार पर शिकायतों का निवारण सुनिश्चित करने के लिए जन मंच आरम्भ किया गया है।

उन्होंने कहा कि लोगों की शिकायतों का शीघ्र निवारण और सरकारी कार्यालयों के चक्कर कम करने के लिए मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1100 शुरू की गई है।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार ने हाल ही में धर्मशाला में ग्लोबल इंवेस्टर्ज मीट का आयोजन किया है और राज्य सरकार प्रदेश में 93 हजार करोड़ रुपये के समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करने में सफल रही है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के दो वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शिमला में 9,000 से 10,000 करोड़ रुपये की ग्राउंडब्रेकिंग सेरेमनी का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश एक छोटा राज्य होने के बावजूद भी देश के अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श साबित हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मैहतपुर तथा ऊना के आईटीआई भवन को चरणबद्ध तरीके से पूर्ण किया जाएगा। उन्होंने मैहतपुर औद्योगिक क्षेत्र की सड़कों के सुधार के लिए 65 लाख रुपये और मैहतपुर में सैप्टिक टैंक निर्माण के लिए 23 लाख रुपये की घोषणा की।

उन्होंने मैहतपुर पुलिस पोस्ट को पुलिस स्टेशन में स्तरोन्नत करने और जिला अस्पताल ऊना में 300 बिस्तर के अस्पताल के बराबर स्टाफ को बढ़ाने की भी घोषणा की।

उन्होंने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला ऊना के लिए दो करोड़ रुपये और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बेहडाला के भवन निर्माण के लिए एक करोड़ रुपये तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला जलग्रां के लिए 70 लाख रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने ऊना में इंडोर स्टेडियम के लिए 70 लाख और ऊना स्थित इंदिरा स्टेडियम के लिए 1.95 करोड़ रुपये की भी घोषणा की।

केन्द्रीय वित्तीय एवं कारपोरेट कार्य राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि केन्द्र सरकार ने महिलाओं को धुंए से मुक्त करने के लिए उज्ज्वला योजना आरम्भ की है, जिसके लिए निःशुल्क गैस कुनेक्शन उपलब्ध करवाई जा रही है। उन्होंने कहा कि अब तक 8 करोड़ परिवारों को निःशुल्क गैस कुनेक्शन उपलब्ध करवाए गए हैं।

कृषि एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. रामलाल मारकण्डा, विधायक राजेश ठाकुर व बलबीर सिंह, हिमुडा के उपाध्यक्ष प्रवीण शर्मा, एसआईडीसी के उपाध्यक्ष प्रो. राम कुमार, एचआरटीसी के उपाध्यक्ष विजय अग्निहोत्री, जिला भाजपा अध्यक्ष बलबीर बग्गा, रेलवे बोर्ड के सदस्य हरिओम भनोट, उपायुक्त ऊना संदीप कुमार तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

देश में शीघ्र लागू होगी...

(पृष्ठ 1 का शेष) बुद्धिमता के कारण सदियों से भारत को विश्व गुरु के रूप में जाना जाता रहा है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए भारत सरकार नई शिक्षा नीति ला रही है, जिससे देश में शिक्षा प्रणाली सुदृढ़ होगी और इसे रोजगारन्मुखी बनाया जाएगा। भारत वैश्विक भाईचारे और शान्तिपूर्वक मिल जुल कर रहने में विश्वास करता है। उन्होंने कहा कि मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया और स्टार्टअप जैसी योजनाओं के कारण युवाओं के लिए देश में रोजगार और स्वरोजगार के अपार अवसर हैं।

उन्होंने कहा कि नए भारत के निर्माण में देश के युवाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने आगामी कुछ वर्षों में देश को पांच ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए विद्यार्थियों से समर्पण की भावना से कार्य करने का आह्वान किया।

गिरिराज साप्ताहिक में ऑनलाइन भुगतानदाताओं के लिए आवश्यक सूचना

गिरिराज साप्ताहिक के ग्राहकों तथा निविदादाताओं के लिए भुगतान हेतु बैंक के माध्यम से निम्नलिखित चालू खाते में ऑनलाइन व्यवस्था आरम्भ की गई है। इस खाते में केवल ऑनलाइन NEFT/RTGS के माध्यम से धनराशि जमा करवाई जा सकती है। खाते में नगद भुगतान मान्य नहीं है।

Sr. No.	Name of Account	Bank A/C No.	Bank name	IFSC Code
1	Sr. Editor, Giriraj Weekly, I&PR Deptt. Shimla-5	**00000036921077970**	SBI, The Mall, Shimla-1	**SBIN 0000718**

जमाकर्ताओं से निवेदन है कि वे ऑनलाइन शुल्क जमा करवाने के उपरान्त गिरिराज कार्यालय को निम्नलिखित जानकारी **E Mail: onlinegiriraj@gmail.com** या डाक द्वारा अवश्य भेजें अन्यथा जमा धनराशि का समायोजन करना असम्भव है जिसके लिए कार्यालय जिम्मेवार नहीं होगा।

भुगतान उपरान्त भेजी जाने वाली जानकारी :-

Sr.No.	Name & Adress of Depositor	UTR No.	Date of deposition of Amt.	Our Office Bill No. & dated Either it Advertisement or Giriraj/Himprastha Subscription	Amt. of Bill Deposited (Rs.)
1					
2					

अगर जमाकर्ता उपरोक्त विवरण नहीं भेजेंगे तो ऐसी स्थिति में कार्यालय जिम्मेवार नहीं होगा और जमाकर्ता की राशि का यथावत समायोजन नहीं किया जा सकेगा।

अधिक जानकारी के लिए निम्न कार्यालय फोन नम्बर पर सम्पर्क करें।

वरिष्ठ संपादक,
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग,
गिरिराज साप्ताहिक, शिमला-5

दूरभाषः 0177-2633145
फैक्स : 0177-2830374

Public Notice

I Shalini Verma W/o Sh. Harnam Singh, R/o Ward No. 4, Chambaghat near Petrol Pump, Tehsil & Distt. Solan, H.P., do hereby solemnly affirm and declare that my name was wrongly entered as Smt. Bindu in revenue records and some other legal documents, whereas my name entered in Adhaar Card and matric certificate entered as Shalini Verma is correct. Now, I want to change my old name from Smt. Bindu to Shalini Verma. So in future I may be known as Shalini Verma for all purposes of revenue records, deeds, writings and other necessary records.

Public Notice

I Chander Shakher S/o Shri Relu Ram, R/o village Khaprona, P.O. Matal, Teh. Chopal, Distt. Shimla, H.P., do hereby solemnly affirm and declare that I have changed my name from Chander Shakher to Chander Shakher Gazta. So in future I may be known as Chander Shakher Gazta for all purposes and necessary records.

नई औद्योगिक इकाइयों में अनिवार्य होंगे प्रदूषण नियंत्रण मापदण्ड

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला में राज्य पर्यावरण एवं संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के शान्त व स्वच्छ पर्यावरण को कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध है और यह सुनिश्चित बनाया जाएगा कि वर्तमान और नई स्थापित होने वाली औद्योगिक इकाइयों में प्रदूषण नियंत्रण के सभी मापदण्डों को पूरा किया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नई स्थापित होने वाली औद्योगिक इकाइयों में प्रदूषण उपचार संयंत्र अनिवार्य बनाया जाए ताकि वातावरण में न्यूनतम प्रदूषण फैले।

मुख्यमंत्री ने औद्योगिक नगरों में प्रदूषण नियंत्रण उपायों के दिए निर्देश

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को यह भी सुनिचित करना चाहिए कि सभी वर्तमान अपशिष्ट उपचार संयंत्र उचित प्रकार से चले ताकि औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले पानी से प्रदूषण न हो।

उन्होंने कहा कि बद्दी-बरोटीवाला, नालागढ़, काला अम्ब व परवाणु जैसे औद्योगिक नगरों में प्रदूषण नियंत्रण पर विशेष ध्यान दिया जाए। बद्दी में अपशिष्ट उपचार संयंत्र के सुधार का कार्य शीघ्रता से पूरा किया जाए, जिससे उद्योगों से सिरसा नदी में जाने वाले 1.10 एमएलडी कूड़े का उपचार सुनिश्चित हो सके। उन्होंने कहा कि काला अम्ब में भी अपशिष्ट उपचार संयंत्र स्थापित करने का प्रस्ताव है, जिससे क्षेत्र के लोगों को काफी राहत मिलेगी। इसके अतिरिक्त काला अम्ब में ठोस कचरा प्रबन्धन की सुविधा प्रदान करने का भी प्रस्ताव है।

उन्होंने निर्देश दिए कि टैंकरों से पानी उपलब्ध करवाकर कच्चे सड़क मार्गो पर धूल हटाने के लिए नियमित रूप से सफाई की जाए। इसके साथ ही सड़क किनारे वृक्ष लगाए जाएं। इन क्षेत्रों में खुले स्थानों पर हरित क्षेत्र, बागीचे और पार्क विकसित किए जाएं, जिसका लाभ लोगों को मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने सम्बन्धित अधिकारियों को मल निकास पाइपों के समुचित डिजाइन और बिछाने तथा इनका उचित रख-रखाव करने के भी निर्देश दिए।

पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री आर. डी. धीमान ने मुख्यमंत्री को आश्वस्त किया कि राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड यह सुनिश्चित बनाएंगा कि राज्य के प्रदूषण मुक्त पर्यावरण को हर कीमत पर संरक्षित रखा जाए। उन्होंने कहा कि दोषियों के विरूद्ध बोर्ड आवश्यक कार्रवाई करेगा।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जिला ऊना के रामपुर में सब्जी मण्डी भवन की आधारशिला रखते हुए।

विश्व के लिए एक विशिष्ट दस्तावेज है भारतीय संविधान- राज्यपाल

संविधान दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय समारोह गत दिनों शिमला के गयेटी थियेटर में आयोजित किया गया। राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय समरोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे जबकि मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने समारोह की अध्यक्षता की।

शिमला में 70वां संविधान दिवस आयोजित

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने इस अवसर पर कहा कि यह हमारे संविधान की विशेषता है कि इसने विश्व के सबसे बडे/ लोकतंत्र भारत की उन्नति में प्रमुख भूमिका निभाई है। डॉ. भीम राव अम्बेडकर के भारतीय संविधान में महत्वपूर्ण योगदान से भारत के नागरिक लाभान्वित हुए हैं। भारतीय नागरिकों को न्याय, समानता, स्वतंत्रता देने के लिए भारतीय संविधान को अपनाया गया था। संविधान को अपनाने के बाद देश के नागरिकों में नए संवैधानिक, वैज्ञानिक भारत में प्रवेश किया जिसने शान्ति, नम्रता और विकास का सूत्रपात किया।

श्री दत्तात्रेय ने कहा कि भारतीय संविधान समस्त विश्व के लिए एक विशिष्ट दस्तावेज है, और इस महान योगदान देने के लिए बाबा सहिब को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हमारा संविधान नागरिकों के कर्त्तव्यों और अधिकारों में सन्तुलन बनाए रखता है जो हमारे संविधान की विशेषता है।

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इस अवसर पर कहा कि वर्ष 1949 में 26 नवम्बर के दिन भारत के संविधान को अपनाया गया और 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया। संविधान दिवस आयोजित करने का उद्देश्य भारतीय संविधान के महत्व और इसके रचनाकार डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना है।

भारतीय संविधान देश का सर्वोच्च विधान है और सरकार द्वारा लागू किया जाने वाला प्रत्येक कानून संविधान के अनुपालन में होता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर एक महान समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ और विधिविद् थे जिन्हें भारतीय संविधान का जनक भी कहा जाता है। उन्होंने कहा कि हमारा संविधान भारत को सार्वभौम, समाजवादी, धर्म निरपेक्ष, प्रजातांत्रिक गणराज्य घोषित करता है, जो इसके नागरिकों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता तथा भाईचारे की भावना को निश्चित करता है।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को भारतीय संविधान के बारे में जागरूक करने के लिए प्रदेश के सभी शिक्षण संस्थानों में जागरूकता शिविर और अभियान आयोजित किए जायेंगे।

शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज ने कहा कि संविधान हमें कई अधिकार प्रदान करने के साथ-साथ नागरिकों के हितों की रक्षा भी करता है।

पंचायतों में विशेष ग्राम सभा बैठकों का आयोजन

प्रदेश में संविधान दिवस के अवसर पर 26 नवम्बर, 2019 को सभी 3226 ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभा की बैठकों का आयोजन किया गया, जिनका प्रारम्भ सभी पंचायतों में संविधान की प्रस्तावना पढ़ने के साथ किया गया। इस अवसर पर पंचायत प्रधानों द्वारा उपस्थित लोगों को संविधान की शपथ भी दिलाई गई। उन्होंने बताया कि ग्राम सभा की इन विशेष बैठकों में ग्राम सभा सदस्यों के अतिरिक्त ग्राम पंचायत के समस्त निर्वाचित सदस्यों का भाग लेना अनिवार्य है। 15 दिसम्बर तक उप ग्राम सभाओं की बैठकें आयोजित की जाएगी, जिनमें सभी सदस्यों को उनके मौलिक कर्तव्यों के बारे में जानकारी दी जाएगी।

वर्ष 2019 में संविधान को लागू हुए 70 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 26 नवम्बर, 2019 से 14 अप्रैल, 2020 तक विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसमें जनता को भारत के संविधान में निहित उनके मौलिक कर्तव्यों के बारे में जागरूक किया जाएगा।

ग्राम पंचायतों में बैठकों के दौरान सरकार की विभिन्न फ्लैगशिप योजनाओं की जानकारी भी दी जाएगी।

वित्तायोग से पंचायतों को 490 करोड़ जारी

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मन्त्री श्री वीरेन्द्र कंवर ने गत दिनों शिमला में कहा कि प्रदेश की समस्त 3226 ग्राम पंचायतों को 14वें वित्तायोग के तहत इस वित्तीय वर्ष की दूसरी तथा अन्तिम किस्त के रूप में 490 करोड़ रुपये की धनराशि जारी कर दी गई है। यह राशि प्रदेश निदेशालय से सीधे ग्राम पंचायत के बैंक खातों में जमा की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों को 14वें वित्तायोग के अन्तर्गत अब तक दी गई समस्त धनराशि को इस वित्तीय वर्ष के अन्त तक व्यय करना होगा। उन्होंने कहा कि शेष राशि भारत सरकार को वापिस लौटा दी जाएगी।

श्री वीरेन्द्र कंवर ने सभी पंचायत के पदाधिकारियों को भी इस राशि को समयसीमा के भीतर व्यय करने के निर्देश दिए हैं तथा ऐसा न करने वाली पंचायतों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

ऊना में 35 करोड़ से निर्मित आधुनिक बस अड्डा जनता को समर्पित

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर गत दिनों जिला ऊना के गुरुद्वारा साहिब किला बाबा बेदी साहिब में गुरु नानक देव जी के 550 वें प्रकाश पर्व समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि गुरु नानक देव जी कहते थे कि प्रत्येक चीज भगवान की इच्छा से होती है, इसलिए ईश्वर ही जानते है कि हमारे लिए क्या सही है और क्या गलत है। उन्होंने कहा कि इसी कारण गुरु नानक देव जी ने सच्चाई का साथ देने पर बल दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वह सौभाग्यशाली है कि शिमला और पंजाब के सुल्तानपुर लोधी में आयोजित 550वें प्रकाश पर्व समारोह में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। गुरु नानक ने हमें समाज के उत्थान और कल्याण के लिए कार्य करना सिखाया है। उन्होंने कहा कि गुरु नानक देव जी ने स्वयं के धर्म के साथ दूसरों के धर्म का भी सम्मान करने की बात कही है।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि गुरुद्वारा साहिब के जीर्णोद्वार के लिए भी प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने जिला प्रशासन को इस ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब तक जाने वाली सड़क और मार्ग के सुधार के निर्देश दिए। उन्होंने इस सड़क के सुधार के लिए 15 लाख रुपये की भी घोषणा की।

इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने 11.05 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले आईटीआई ऊना के भवन की आधारशिला रखी। उन्होंने 3.74 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले ईवीएम/वीवीपैट वेयर हाउस ऊना का शिलान्यास किया। इसके उपरांत, मुख्यमंत्री ने कुटलेहड़ निर्वाचन क्षेत्र, ऊना के कुछ भाग और अम्ब खण्ड के गांवों के लिए 30 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली जलापूर्ति योजना का शिलान्यास किया।

उन्होंने 2.92 करोड़ रुपये की राशि व्यय कर निर्मित होने वाले स्वास्थ्य विभाग के टाइप-2 और टाइप-3 के 6-6 आवासीय भवन की भी आधारशीला रखी। उन्होंने 29 करोड़ रुपये की राशि व्यय कर ऊना के रामपुर स्थित एचआरटीसी वर्कशॉप के समीप सब्जी मण्डी भवन की आधारशीला भी रखी।

मुख्यमंत्री ने कुठार खुर्द से कुठार कलां सड़क के सुधार और मोहाला ब्राहण सड़क, लोअर भरोलियन, लोअर देलां की सम्पर्क सड़क को चौड़ा करने और कुठार खुर्द और कुठार कलां की सर्कुलर सड़क को पूर्ण करने का भूमि पूजन किया, जिस पर 3.20 करोड़ रुपये की राशि व्यय की जाएगी।

उन्होंने 2.91 करोड़ रुपये की लागत से आरटीओ ऊना के नवनिर्मित कार्यालय भवन का उद्घाटन किया।

मुख्यमंत्री ने ऊना विधानसभा क्षेत्र के ऊना खण्ड के हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह ऊना के समीप 32.63 करोड़ रुपये की लागत से उपलब्ध होने वाली बहु-ग्रामीण जलापूर्ति योजना की आधारशीला रखी।

मुख्यमंत्री ने 3.33 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले ऊना के परिधि गृह की आधारशीला भी रखी।

मुख्यमंत्री ने लगभग 35 करोड़ रुपये की राशि व्यय कर निर्मित किए गए नए बस अड्डे ऊना का उद्घाटन भी किया। केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि गुरु नानक देव जी न केवल एक महान गुरु थे बल्कि समाज सुधारक और एक महान विचार भी थे।

उन्होंने मुख्यमंत्री से प्रमुख धार्मिक स्थानों जैसे ज्वाला जी, नैना देवी जी, चिन्तपूर्णी जी, बाबा बालक नाथ जी आदि को जोड़ने के लिए परियोजना आरम्भ करने का आग्रह किया।

प्लास्टिक कचरा खरीद नीति को प्रभावी ढंग से लागू करने के निर्देश

पुनः चक्रित नहीं होने वाले और एकल उपयोग प्लास्टिक नीति को फील्ड स्तर पर लागू करने के लिए विभिन्न संस्थागत प्रबन्धों की समीक्षा बैठक गत दिनों वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिक विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव आर.डी. धीमान ने की। उन्होंने सभी उपायुक्तों, स्थानीय शहरी निकायों के प्रतिनिधियों और सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों के साथ चर्चा की।

आर.डी. धीमान ने कहा कि इस नीति को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किया जाए ताकि प्रदेश को प्लास्टिक कचरे से मुक्त किया जा सके।

उन्होंने सभी उपायुक्तों को यह सुनिश्चित बनाने के निर्देश दिए कि सम्बन्धित स्थानीय शहरी निकाय संग्रहण केन्द्र स्थापित करें, कूड़ा उठाने वाले पंजीकृतों और खरीदे गए प्लास्टिक कचरे का उपयोग सड़क निर्माण और सीमेंट उद्योगों में इंधन के लिए हो।

पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के निदेशक डी.सी. राणा ने अवगत करवाया कि राज्य सरकार पुनः चक्रित नहीं होने वाले और एकल उपयोग प्लास्टिक को कूड़ा उठने वालों के माध्यम से घरों से 75 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से खरीदेगी। इसके लिए नीति 1 अक्तूबर, 2019 को अधिसूचित की गई है।

उन्होंने कहा कि अभी तक 1055 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे को खरीदा जा चुका है।

idk'kd ,o i/kku lEiknd% gjcl flg cldku] fun'kd] lpuk ,o tu lEidl foHkkx] fg-i- f'keyk&171002] eæd% uhjt dekj] fu;=d] eæ.k rFkk y[ku lkexh foHkkx] f'keyk&171005] Qku% 2830381&PBX.A29] ofj"B lEiknd% foukn Hkkj}kt] lEiknd% on idk'k dk;ky;% fg-i- eæ.kky; ifjlj] f'keyk&171005] Qku% 2633145 o QDl% 2830374] b&ey% girirajhp@gmail.com. OR girirajweekly 1978 @yahoo.co.in ikflr LFkku% fxfjjkt dk;ky;A ¼fxfjjkt lklrkfgd e idkf'kr y[kk e 0;Dr fopkjk l lEiknd; lgefr vfuok;l ugh½